ज्येष्ठ–आषाढ़ 1937 जून 2015 खण्ड 27 अंक 06

डीआरडीओ

डी आर डी ओ की मासिक गृह पत्रिका

समाचार

अस्त्र प्रक्षेपास्त्र का सफल परीक्षण

अस्त्र प्रक्षेपास्त्र का सफल परीक्षण।

भारतीय दृष्टि क्षेत्र से परे (बी वी आर) वायु–से–वायु में मार करने वाले प्रक्षेपास्त्र 'अस्त्र' का भारतीय वायु सेना द्वारा एकीकृत परीक्षण परिसर (आई टी आर), चांदीपुर के निकट ओडिशा तट पर 19 मार्च 2015 को सफल परीक्षण किया गया। इस प्रक्षेपास्त्र का अभिकल्पन एवं विकास स्वेदशी रूप से डी आर डी ओ द्वारा किया गया है। इस परीक्षण में एस यू–30 वायुयान से अस्त्र (जिसमें आयुध के स्थान पर दूरमिति उपकरण थे) को पायलेट रहित वायुयान 'लक्ष्य' को भेदने के लिए प्रक्षेपित किया गया। प्रक्षेपास्त्र द्वारा सफलतापूर्वक लक्ष्य भेदन किया गया, इसे दूरमिति तथा इलैक्ट्रो–ऑप्टिकल निगरानी प्रणाली से सत्यापित किया गया।

इससे पूर्व 18 मार्च 2015 को भी एस यू–30 वायुयान से अस्त्र प्रक्षेपास्त्र को प्रक्षेपित किया गया था। इसका उद्देश्य उच्च शक्ति के गुरूत्वाकर्षण (30'जी' तक) के दौरान प्रक्षेपास्त्र की कार्यदक्षता को जाँचना था। वायु मुख्यालय द्वारा इन चौथे एवं पाँचवे परीक्षणों को मूर्त रूप दिया गया।

डी आर डी एल, हैदराबाद इस प्रक्षेपास्त्र विकास की प्रमुख एजेंसी है। डॉ के जयरमण, निदेशक, डी आर डी एल; तथा डॉ सुभाष चंद्रन, कार्यक्रम निदेशक इस अवसर पर मिशन केन्द्र पर मौजूद रहे। डॉ वी जी सेकरन, महानिदेशक (प्रक्षेपास्त्र एवं सामरिक प्रणालियां), डी आर डी ओ ने अभिकल्पनकर्ताओं, प्रौद्योगिकिविदों, उत्पादनकर्ताओं, गुणवत्ता एजेंसियों, तथा वायुसेना की टीम को इस जटिल प्रणाली के विकास तथा परीक्षण के लिए बधाई दी।

डॉ एस वेणुगोपाल, परियोजना निदेशक ने बताया कि 'अस्त्र' के चौथे तथा पाँचवे वायु परीक्षण सभी मानकों पर खरे उतरे हैं। निकट भविष्य में इस प्रक्षेपास्त्र के अन्य परीक्षण भी किए जाएंगे जिससे एक प्रभावशाली शस्त्र के रूप में इसकी पहचान सिद्ध हो सकेगी।

इन्डो-म्यांमार सैन्य सहयोग

बढ़ते हुए भारत–म्यांमार सैन्य सहयोग के क्रम में पद्धति अध्ययन तथा विश्लेषण संस्थान (ईसा), दिल्ली द्वारा विकसित आई एन एफ सी ओ टी टी–एम (इन्फकोट–एम) मैप कंवर्टर तथा मैप कॉपीयर सॉफ्टवेयर म्यांमार सेना को प्रदान किया गया है। इस सॉफ्टवेयर की मदद से क्षेत्र विन्यास का मानचित्र तैयार किया जा सकता है, यह एक प्रकार का रणनीतिक प्रशिक्षण उपकरण भी है। ईसा के वैज्ञानिकों की टीम ने 23 फरवरी 2015 से 03 मार्च 2015 तक इस सॉफ्टवेयर के हस्तांतरण हेतु म्यांमार का दौरा किया। इस दौरान कमांड तथा जनरल स्टॉफ कॉलेज (सी जी एस सी), कालाव, म्यांमार में म्यांमार सेना के अधिकारियों को आवश्यक उपयोगकर्ता प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया।

बांये से दांये: नौसेना कैप्टन को को क्याव, ब्रिगेडियर जनरल मिंट मोंग ऊ एवं श्री एच एस भारती, आई एन एफ सी ओ टी टी–एम (इन्फकोट–एम) मैप कंवर्टर सॉफ्टवेयर का विमोचन करते हुए।

सॉफ्टवेयर का अनावरण समारोह 26 फरवरी 2015 को सी जी एस सी, कालाव में आयोजित किया गया। इस अवसर पर भारतीय सैन्य प्रतिनिधि, म्यांमार में भारतीय दूतावास; ब्रिगेडियर जरनल आंग थू, कमांडेट, सी जी एस सी; ब्रिगेडियर जनरल मिंट मोंग ऊ, मुख्य प्रशिक्षक कार्यालय, सी जी एस सी; ब्रिगेडियर आलोक कैकर, कमांडेंट डब्ल्यू ए आर डी ई सी (ए आर टी आर ए सी); श्री एच एस भारती, वैज्ञानिक एफ, ईसा; श्री सुधाकर कुमार, वैज्ञानिक डी, ईसा; ले. कर्नल दिपांकर चौधरी, डब्ल्यू ए आर डी ई सी तथा म्यांमार सेना के अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित थे।

इस अंक में

- सासे का फुटकल अभियान सफल
- जैव शौचालय सुविधा का उद्घाटन
- नेत्र जांच शिविर का आयोजन
- प्राक्षेपिकी परीक्षण सुविधा स्थापित
- अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह
- स्थापना दिवस समारोह
- राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह
- पुरस्कार
- स्वच्छ भारत अभियान
- कार्मिक समाचार
- ई एम यू, दिल्ली पूसा बागवानी प्रदर्शनी 2015 में विजयी
- राष्ट्रीय सुरक्षा सप्ताह
- मानव संसाधन विकास गतिविधियां
- डी आर डी ओ द्वारा सामाजिक योगदान
- खेलकूद समाचार
- भारतीय विज्ञान सम्मेलन तथा एस आई ए टी प्रदर्शनी–2015 में प्रतिभागिता
- डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं में पधारे अतिथिगण

आभार

डी आर डी ओ समाचार का सम्पादक मंडल वर्ष भर नियमित रूप से प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं से संबंधित समाचार भेजने के लिए सभी संवाददाताओं, राजभाषा अधिकारियों, तथा प्रबुद्ध निदेशकगणों का आभार व्यक्त करता है।

drdo.gov.in/drdo/pub/samachar/index.html

सासे का फुटकल अभियान सफल

देश में अपनी तरह के पहले अभियान में लद्दाख की फुटकल नदी के मार्ग में हुए भू–स्खलन के कारण बनी झील को नियंत्रित रूप से तोड़ने का कार्य पूर्ण किया गया। इस अभियान का नेतृत्व श्री आर के वर्मा, वैज्ञानिक एफ, हिम तथा अवधाव अध्ययन स्थापना (सासे), मनाली ने किया। इस अभियान में राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एन डी एम ए), सेना, सीमा सड़क संगठन, केन्द्रीय जल कमीशन तथा भारतीय सर्वेक्षण के विशेषज्ञों ने सहयोग किया। फुटकल नदी जम्मू तथा कश्मीर के कारगिल जिले में बहने वाली जंस्कार नदी की उपनदी है।

भू–स्खलन स्थल।

जनवरी माह में हुए भू–स्खलन के कारण फुटकल नदी का मार्ग अवरूद्ध हो गया था। इससे 14 किमी लम्बी, 130 मीटर चौड़ी तथा 50 मी ऊँची झील का निर्माण हो गया था, जिसने एक बांध का रूप धारण कर लिया था। इससे नीचे बसे गांवों तथा जल–विद्युत संयंत्र को खतरा हो गया था।

इस टीम को वायुसेना के हेलीकॉप्टर द्वारा बर्फ से ढके क्षेत्र में झील से लगभग 100 मीटर की दूरी पर उतारा गया। उतरने के स्थान से झील तक बर्फ को काटकर रास्ता बनाया गया। यह टीम एक हफ्ते तक कैंप बनाकर यहाँ ड़टी रही। इस दौरान नारूदी सुरंग का उपयोग कर नियंत्रित रूप से धमाके किए गए, जिसके परिणामस्वरूप 100 मीटर लंबा तथा दो मीटर चौड़ा रास्ता पानी के बहाव के लिए बना।

टीम द्वारा किए गए उल्लेखनीय कार्य की सराहना करते हुए श्री अश्वघोष गंजू, निदेशक, सासे ने कहा "विकट परिस्थितियों, दुर्गम क्षेत्र, रात में –35 डिग्री सेल्सियस तक के सर्द परिवेश में स्थिति का सटीक जायजा लेते हुए तथा उत्तम योजना के साथ पूर्ण किए गए इस कार्य के लिए बधाई। यदि विस्फोटों की तीव्रता अधिक होती तो साथ की चोटियों से हिमस्खलन का खतरा भी था।" आपने यह भी बताया कि भू–स्खलन के कारण बना बांध अत्यंत अस्थिर होता है। यदि यह बांध टूटता तो 15–20 मीटर ऊँची लहर नीचे बसे स्थानों की ओर बढ़ती, जिससे जान–माल का भारी नुकसान हो सकता था। सचिव, एन डी एम ए द्वारा इस टीम को इस अनुकरणीय कार्य हेतु प्रशंसा प्रमाण–पत्र भी प्रदान किया गया है।

श्री आर के वर्मा (एकदम बांये), टीम प्रमुख एवं अन्य विशेषज्ञ।

जैव शौचालय सुविधा का उद्घाटन

डॉ लोकेन्द्र सिंह, निदेशक, डी आर डी ई, ग्वालियर, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे (एस ई सी आर), नागपुर में भारतीय रेल के पर्यावरण अनुकूल शौचालयों हेतु प्रशिक्षण और विकास केंद्र का उद्घाटन करते हुए।

डॉ लोकेन्द्र सिंह, उत्कृष्ट वैज्ञानिक, निदेशक, रक्षा अनुसंधान एवं विकास स्थापना (डी आर डी ई), ग्वालियर ने दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे (एस ई सी आर), नागपुर की मोतीबाग कार्यशाला में भारतीय रेल के पर्यावरण अनुकूल शौचालयों हेतु प्रशिक्षण और विकास केंद्र का उद्घाटन किया। श्री आर एस कोचक, मुख्य यांत्रिक इंजीनियर, एस ई सी आर, बिलासपुर, भारतीय रेलवे के अधिकारीगण और बायोडाइजेस्टर सुविधा के विकास में शामिल डी आर डी ई के वैज्ञानिक भी इस अवसर पर उपस्थित थे। इस केंद्र में परीक्षण और प्रवाह की गुणवत्ता की निगरानी के लिए एक गुणवत्ता आश्वासन/गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशाला है और कैड एवं सी ए ई जैसे नवीनतम डिजाइन सॉफ्टवेयर की एक डिजाइन प्रयोगशाला है और बायोडाइजेस्टर के लिए सम्मेलन और प्रदर्शनी कक्ष जैसी अत्याधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

अपने उद्घाटन भाषण में डॉ लोकेन्द्र सिंह ने भारतीय रेल और डी आर डी ओ के बीच समझौता ज्ञापन को टीम के रूप में कार्य करने का बेहतरीन उदाहरण बताया जिसमें दोनों संगठनों ने बायोडाइजेस्टर आधारित जैव शौचालय को प्रदान करके भारतीय रेल को साफ सुथरा रखने में कड़ी मेहनत की है। श्री आर एस कोचक ने प्रशिक्षण और विकास केंद्र से सुसज्जित अवायवीय माइक्रोबियल इनोकुलम उत्पादन संयंत्र के विकास की सराहना की और कहा कि यह इमारत भारतीय रेलवे अधिकारियों और कर्मचारियों की प्रशिक्षण आवश्यकताओं और बायोडाइजेस्टर की प्रवाह गुणवत्ता के मानकों का मूल्याकंन करेगी।

नेत्र जांच शिविर का आयोजन

निर्माण समिति, रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एम आर एल), हैदराबाद में आयोजित 16–18 मार्च 2015 के दौरान डी एम आर एल के कर्मचारियों के लाभ के लिए एक मुफ्त नेत्र जाँच शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर का आयोजन हैदराबाद में चैपल रोड पर स्थित सी जी एच एस सूचीबद्ध अस्पताल स्वरूप आई सेन्टर के सहयोग से किया गया। इस शिविर का उद्घाटन डी एम आर एल के निदेशक एवं विशिष्ट वैज्ञानिक, डॉ अमोल ए गोखले द्वारा किया गया।

डॉ अमोल ए गोखले (बाएं), निदेशक, डी एम आर एल नेत्र जांच शिविर के दौरान अपनी आंखों की जांच कराते हुए।

drdo.gov.in/drdo/pub/samachar/index.html

प्राक्षेपिकी परीक्षण सुविधा स्थापित

डॉ अविनाश चन्दर, रक्षा मंत्री के तत्कालीन वैज्ञानिक सलाहकार, टी बी आर एल में प्रक्षेपास्त्र परीक्षण सुविधा का उद्घाटन करते हुए।

किसी भी सेना द्वारा उसकी प्रचालन जरूरतों को पूरा करने के लिए प्राक्षेपिकी परीक्षण और शरीर कवच का मूल्यांकन करना उसकी सबसे बडी प्राथमिकताएँ हैं। 1970 से, चरम प्राक्षेपिकी अनुसंधान प्रयोगशाला (टी बी आर एल), चण्ड़ीगढ़ शारीरिक कवच, वाहन और संरचनात्मक कवच जैसे सुरक्षा प्रणालियों के प्राक्षेपिकी मूल्यांकन के लिए उसकी विशेषज्ञता और मूल्यांकन सुविधाएं प्रदान कर रही है। इस प्रयोगशाला के पास एक पूर्ण छोटे हथियारों की प्राक्षेपिकी क्षेत्र है जो विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुसार भारतीय सशस्त्र बलों, अर्द्धसैनिक बलों और अन्य कानून प्रवर्तन एजेंसियों की सुरक्षा प्रणालियों के प्राक्षेपिकी मूल्यांकन की आवश्यकता को पूरा करता है। यह क्षेत्र अन्य डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं के कवच साम्रगी के विकास में भी मदद करता है।

हाल के दिनों में, वर्तमान राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्यों के मद्देनजर और खतरनाक स्तर के जटिल छोटे हथियारों और युद्ध सामग्री की उपलब्धता से सुरक्षा प्रणालियों की आवश्यकता तेजी से बढ़ी है। सुरक्षा प्रणालियों के लिए परीक्षण और मूल्याकंन सुविधाएं लगातार विकसित हो रही हैं और वैश्विक रूप से तुलनात्मक, तेज, सटीक और किफायती के अतिरिक्त सुरक्षित और अचूक हैं। एक नई अत्याधुनिक प्राक्षेपिकी परीक्षण सुविधा को टी बी आर एल में स्थापित किया गया है जो वैश्विक मानकों के अनुसार प्राक्षेपिकी मूल्यांकन करती है। यह सुविधा हमारी सशस्त्र, अर्द्धसैनिक बलों और पुलिस बलों की बढ़ी हुई आवश्यकताओं की पूर्ति के अलावा डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं और अन्य अनुसंधान संगठनों को भी परीक्षण सहायता प्रदान करती है।

पाठकों की राय

आपकी राय हमारे लिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इससे हमें इस पत्रिका को और अधिक उपयोगी तथा सूचनाप्रद बनाने तथा संगठन को बेहतर रूप में अपनी सेवा उपलब्ध कराने के अवसर प्राप्त होते हैं। डी आर डी ओ समाचार अपने सम्मानित पाठकों से प्रकाशित सामग्रियों तथा विषयों की गुणवत्ता के बारे में अपने सुझाव प्रेषित करने का अनुरोध करता है। कृपया अपने सुझाव निम्नलिखित पते पर भेजें:

संपादक, डी आर डी ओ समाचार, रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केंद्र (डेसीडॉक), मेटकॉफ हाउस, दिल्ली–110054 ई–मेल : director@desidoc.drdo.in

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह

डी आर डी ओ मुख्यालय

भारत सरकार में मानव संसाधन विकास मंत्री, माननीय श्रीमती स्मृति जुबिन ईरानी ने कन्या शिक्षा को बढ़ावा देने और ग्रामीण जीवन में बदलाव के लिए एक बड़ी भूमिका निभाने के लिए डी आर डी ओ की महिला वैज्ञानिकों का आह्वान किया। 09 मार्च 2015 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर डी आर डी ओ मुख्यालय में अनुसंधान और विज्ञान में उत्कृष्टता में महिला अन्वेषक नामक एक राष्ट्रीय कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए श्रीमती ईरानी ने कहा कि महिला वैज्ञानिक उन अनगिनत लड़कियों के लिए एक प्रेरणा स्त्रोत हो सकती हैं जो अपने सपनों को साकार करना चाहती हैं। उन्होनें कहा कि उनका मंत्रालय उडान नामक कार्यक्रम शुरू करने जा रहा है जिससे वंचित क्षेत्रों की लडकियाँ प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करके आई आई टी और आई आई एम में दाखिला पा सकेंगी और डी आर डी ओ के प्रतिभाशाली लोगों को उन लडकियों से संवाद करना चाहिए जो जीवन में सफल होना चाहती हैं। मंत्री ने प्रमुख अनुसंधान संगठन की महिला वैज्ञानिकों को उन्नत भारत अभियान के सफलता के लिए योगदान देने का आह्वान किया और ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के सामने आने वाले मुद्दों को उठाया।

महिला अविष्कारकों की अनुसंधान और विज्ञान में श्रेष्ठता नामक राष्ट्रीय कार्यशाला के अवसर पर मंचासीन श्रीमती अलका दीवान, डॉ चित्रा राजगोपाल, श्री अनिल एम दातार, श्रीमती स्मृति जुबिन ईरानी, डॉ के तमिलमणि, श्री जी एस मलिक एवं श्रीमती अलका सूरी (बांये से दांये)।

माननीय श्रीमती स्मृति जुबिन ईरानी, डी आर डी ओ द्वारा आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला महिला अविष्कारकों की अनुसंधान और विज्ञान में श्रेष्ठता का दीप प्रज्जवलित कर उद्घाटन करते हुए।

पिछले वर्ष भारत सरकार ने उन्नत भारत अभियान की शुरूआत की और यह देश के आई आई टी और राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान द्वारा प्रयोगिक स्तर पर शुरू किया गया जिसका उद्देश्य ग्रामीण भारत का प्रौद्योगिकी अन्वेषणों से उत्थान करना था। इस अवसर पर डॉ के तमिलमणी, विशिष्ट वैज्ञानिक, महानिदेशक (एयरो), डी आर डी ओ ने कहा कि महिलाओं के लिए निर्णय लेने के

श्रीमती स्मृति जुबिन ईरानी ने महिला अविष्कारकों की अनुसंधान और विज्ञान में श्रेष्ठता नामक राष्ट्रीय कार्यशाला के अवसर पर सार संग्रह का विमोचन किया।

drdo.gov.in/drdo/pub/samachar/index.html

लिए संसाधनों की सीमित उपलब्धता उनके अपने लाभ के लिए उनकी पूर्ण क्षमताएं विकसित करने के लिए सीमित हो जाती हैं। इस अहसास से पुरुषों और महिलाओं के लिए अवसरों को बराबर करने के प्रयासों को प्रेरित किया है। इससे पहले, डॉ चित्रा राजगोपाल, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, सीफीस, दिल्ली ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि अन्वेषण उसी वातावरण में बढ़ता हैं जहां हर किसी को प्रयोग करने की स्वतंत्रता हो और वह अपने प्रयोग और त्रुटि से सीख सके। उन्होंने कहा कि अन्वेषण किसी विचार और आविष्कार को उत्पाद और सेवा में बदलने की विधि को कहते हैं जिसकी कोई कीमत हो। इस दोदिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन सीफीस ने किया और इसमें डी आर डी ओ की विभिन्न प्रयोगशालाओं की 200 महिला वैज्ञानिकों नें भाग लिया।

आयुध अनुसंधान तथा विकास स्थापना (ए आर डी ई), पुणे

ए आर डी ई में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का उद्घाटन।

आयुध अनुसंधान तथा विकास स्थापना (ए आर डी ई), पुणे में 10 मार्च 2015 को स्वर्गीय श्रीमती सवित्री बाई फूले (समाज सुधारक), जिन्होंने महिलाओं की शिक्षा के लिए अभियान का नेतृत्व किया था, उनके स्मृति दिन के शुभ अवसर पर अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। इस अवसर पर डॉ के एम राजन, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, ए आर डी ई, मुख्य अतिथि थे और उन्होंने अतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2015 पर संयुक्त राष्ट्र के नारे 'सशक्त महिला–सशक्त मानवता–तस्वीर लो' पर भाषण दिया। डॉ श्रीमती स्मिता नाईक, अध्यक्ष, ए आर डी ई, महिला प्रकोष्ठ, ने महिला प्रकोष्ठ की गतिविधियों की रिपोर्ट पेश की। कैप्टन डॉ रितु बियानी, एक कैंसर उत्तरजीवी और जानी–मानी कार्यकर्ता द्वारा एक संवादात्मक कार्यशाला 'कैंसर जागरूकता, कैंसर पर नियंत्रण इससे पहले ये आपको नियंत्रित करे' का आयोजन किया गया। एक सांस्कृतिक कार्यक्रम और मजेदार खेल का भी आयोजन किया गया।

सैन्य उड़नयोग्यता तथा प्रमाणीकरण केंद्र (सेमीलेक), बैंगलूरू

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर डॉ सुश्री मालाथी के होला, पैरालिम्पियन और अंतर्राष्ट्रीय पैरा एथलीट ने सैन्य उड़नयोग्यता तथा प्रमाणीकरण केंद्र (सेमीलेक), बैंगलूरू का भ्रमण किया और महिला कर्मचारियों को संबोधित किया। उनकी उपस्थिति सभी के लिए एक प्रेरणा थी।

रक्षा उड्डयानिकी अनुसंधान स्थापना (डेयर), बैंगलूरू

डेयर में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर श्रीमती सौम्या आचर एवं डॉ के महेश्वरा रेड्डी।

रक्षा उड्डयानिकी अनुसंधान स्थापना (डेयर), बैंगलूरू ने 20 मार्च 2015 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया। इस दिन महिला कर्मचारियों के लिए विभिन्न खेल गतिविधियाँ आयोजित की गई। डॉ के महेश्वरा रेड्डी, सह–निदेशक, डेयर ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की और जनसमूह को महिला सशक्तीकरण पर सम्बोधित किया। इस अवसर पर श्रीमती सौम्य आचर, आई आर एस, संयुक्त आयुक्त, आयकर विभाग मुख्य अतिथि थीं। उन्होंने महिला सशक्तीकरण के संदर्भ में परिवारिक और व्यावसायिक जीवन की चुनौतियों और अनुभव बांटे और परिवार में लड़कियों/महिलाओं को उनके सपनों को हकीकत में बदलने के लिए समय और स्थान देने की गुजारिश की। मुख्य अतिथि द्वारा विभिन्न खेल–प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए।

रक्षा प्रयोगशाला (डी एल), जोधपुर

डी एल जे में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का उद्घाटन।

16 मार्च 2015 को रक्षा प्रयोगशाला (डी एल), जोधपुर में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। इस अवसर पर डॉ कामिनी दिनेश, पूर्व निदेशक, के एन महिला महाविद्यालय, जोधपुर मुख्य अतिथि थी। डॉ एस आर वढेरा, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, डी एल जे ने मुख्य अतिथि और महिला कर्मचारियों का स्वागत किया डॉ कामिनी दिनेश ने इस देश की महिलाओं की दशा पर चिंता प्रकट की और कहा कि यह हास्यास्पद है कि शिक्षित लोगों की भी गलत राय है और वो महिलाओं पर गलत बयान और व्यक्तव्य दे रहे हैं जिससे प्रायः महिलाओं की गरिमा को ठेस पहुँच रही है। उन्होंने समाज में पुरूषों और महिलाओं के बीच समानता की वकालत की।

रक्षा इलैक्ट्रोनिकी अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एल आर एल), हैदराबाद

डी एल आर एल में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह का दृश्य।

रक्षा इलैक्ट्रोनिकी अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एल आर एल), हैदराबाद ने 17 मार्च 2015 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया। इस अवसर पर श्रीमती अंजना सिन्हा, आई पी एस, महानिरीक्षक, पुलिस (सामान्य एवं किशोर अपराध), आंध्र प्रदेश मुख्य अतिथि थी और श्रीमती बी हेमलता ए डी एल आर एल की पहली महिला विशिष्ट अतिथि थी। डॉ सी जी बालाजी, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, डी एल आर एल, ने समारोह की अध्यक्षता की। श्रीमती नीता गोगिया, वैज्ञानिक जी, सह–मुख्याध्यक्ष, महिला प्रकोष्ठ, डी एल आर एल ने स्वागत सम्बोधन दिया। श्रीमती अंजना सिन्हा ने महिला सशक्तीकरण पर व्याख्यान दिया इसके बाद डॉ के निरंजन रेड्डी ने परदे में नारीत्व पर आमंत्रित व्याख्यान दिया। कार्यक्रम के एक भाग के रूप में मनोरंजक स्मृति खेल और प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया। श्रीमती लक्ष्मी, वैज्ञानिक ई, सदस्य सचिव, महिला प्रकोष्ठ, डी एल आर एल के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ इस कार्यक्रम का समापन हुआ।

गैस टरबाइन अनुसंधान स्थापना (जी टी आर ई), बैंगलूरू

प्रोफेसर शारदा श्रीनिवासन, जी टी आर ई में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का उद्घाटन करती हुई।

गैस टरबाइन अनुसंधान स्थापना (जी टी आर ई), बैंगलूरू ने 09 मार्च 2015 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया। डॉ सी पी रामानारायणन, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, जी टी आर ई ने समारोह की अध्यक्षता की। प्रोफेसर शारदा श्रीनिवासन, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडीज, इस अवसर पर मुख्य अतिथि थीं और श्रीमती संतोषम तमिलमणी और श्रीमती लक्ष्मी रामानारायणन विशिष्ट अतिथि थीं। बाद में, प्रोफेसर शारदा श्रीनिवासन ने भारतीय पुरातत्व विरासत और धातु विश्लेषण में विभिन्न उच्च तकनीक के उपयोग के बारे में अपना ज्ञान साझा किया।

drdo.gov.in/drdo/pub/samachar/index.html

उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला (एच ई एम आर एल), पुणे

एच ई एम आर एल में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर महिलाओं को सम्बोधित करते डॉ एस एन अस्थाना।

उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला (एच ई एम आर एल), पुणे में 11 मार्च 2015 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। श्रीमती जे के नायर, उपाध्यक्ष, महिला समिति, एच ई एम आर एल ने इस दिवस के महत्व पर प्रकाश डाला और एच ई एम आर एल की महिला समिति की गतिविधियों की संक्षिप्त जानकारी दी। डॉ एस एन अस्थाना, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं कार्यकारी निदेशक, एच ई एम आर एल ने जनसमूह को सम्बोधित किया और समाज के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के योगदान और उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर विजडम सोल्यूशंस की तरफ से आंतरिक सुन्दरता और आंतरिक शान्ति पर गतिविधि आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। एच ई एम आर एल की लगभग 120 महिला कर्मचारियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया जिसमें तनाव प्रबन्धन, आत्म जागरूकता और भावनात्मक परिपक्वता के सत्र शामिल थे। प्रत्येक सत्र के बाद हथकड़ी, टावर बिल्डिंग और मैचबॉक्स मूल्य इत्यादि गतिविधियाँ आयोजित की गई।

चरम प्राक्षेपिकी अनुसंधान प्रयोगशाला (टी बी आर एल), चंडीगढ़

चरम प्राक्षेपिकी अनुसंधान प्रयोगशाला (टी बी आर एल), चंडीगढ़ में महिला दिवस के अवसर पर आमंत्रित व्याख्यान आयोजित किए गए, जिसमें विविध क्षेत्रों में उपलब्धि हासिल करने वाली प्रख्यात महिलाओं ने व्याख्यान दिए। महिला कर्मचारियों के एक समर्पित वेब पोर्टल को लाइव किया गया जिससे अधिक से अधिक महिला कर्मचारियों का जुड़ाव सुनिश्चित किया जा सके और सरलता एवं तेजी से महिलाओं की समस्याओं का समाधान किया जा सके।

अनुसंधान केंद्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद

आर सी आई में सुश्री दीपनवीता चट्टोपाध्याय, अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का उद्घाटन करती हुई।

अनुसंधान केंद्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद ने 17 मार्च 2015 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन किया। इस अवसर पर सुश्री अरूणा बहुगुणा, आई पी एस, निदेशक राष्ट्रीय पुलिस अकादमी, हैदराबाद और सुश्री दीपनवीता चट्टोपाध्याय, सी ई ओ, आई के पी, नालेज पार्क, मुख्य अतिथि थीं। सुश्री दीपनवीता ने महिलाओं को विज्ञान और प्रौद्योगिकियों के सभी क्षेत्रों में उत्कृष्ट बनने का आह्वान किया। सुश्री अरुणा बहुगुणा ने कहा कि महिलाओं को वर्तमान समय की समस्याओं का सामना करने के लिए और अधिक सकारात्मक तथा ऊर्जावान बनने की जरूरत है। डॉ जी सतीश रेड्डी, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, आर सी आई, ने प्रक्षेपास्त्र अनुसंधान एवं विकास में महिला वैज्ञानिकों और कर्मचारियों की उपलब्धियों की सराहना की। बाद में विज्ञान और प्रौद्योगिकी में 'महिला मार्गदर्शकों की कमी क्यों' पर एक पैनल चर्चा की गई।

संग्राम वाहन अनुसंधान एवं विकास स्थापना (सी वी आर डी ई), चेन्नई

संग्राम वाहन अनुसंधान एवं विकास स्थापना (सी वी आर डी ई), चेन्नई ने 26 मार्च 2015 को भव्य तरीके से अपना स्थापना दिवस मनाया। श्री वी चंद्र मोहन, उपाध्यक्ष निर्माण समिति ने उपस्थित जनसमूह का स्वागत किया। श्री ए वी रघुपति, वैज्ञानिक ई, अध्यक्ष, उत्सव समिति ने सी वी आर डी ई के इतिहास के बारे में बताया। डॉ सी चंद्रशेखरन, अपर निदेशक (प्रबन्धन), ने वर्ष 2014 के दौरान निर्माण समिति और अन्य उपसमितियों के कार्यकलापों तथा उपलब्धियों पर संक्षिप्त टिप्पणी दी।

डॉ पी शिवकुमार, उत्थापन दिवस के अवसर पर सी वी आर डी ई कार्मिकों को सम्बोधित करते हुए।

डॉ पी शिवकुमार, उत्कृष्ट वैज्ञानिक, निदेशक, सी वी आर डी ई ने अर्जुन एम बी टी एम के–द्वितीय, अर्जुन कैटापुट और मानव रहित ट्रेक्टड वाहन (मुंत्रा) का विकास जैसी उपलब्धियों के बारे में बताया। उन्होंने कर्मचारियों को प्रधानमंत्री के 'स्वच्छ भारत अभियान' और 'मेक इन इंडिया कार्यक्रम' की स्थापना करने की शपथ दिलाई। सी वी आर डी ई अधिकारियों और कर्मचारियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों को प्रस्तुत किया गया। वार्षिक प्रयोगशाला वैज्ञानिक पुरस्कार, प्रौद्योगिकी समूह पुरस्कार, डी आर टी सी के लिए प्रयोगशाला पुरस्कार, प्रशासनिक और सम्बद्ध श्रेणियों के पुरस्कार मेधावी कर्मचारियों को प्रदान किए गए। जिन कर्मचारियों ने 25 साल की उत्कृष्ट सेवा प्रदान की है उन्हें स्मृति चिन्ह के साथ सम्मानित किया गया। विभिन्न प्रतियोगिताओं और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। श्री के अथावन, सचिव, उत्सव समिति, ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया।

उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला (एच ई एम आर एल), पुणे

उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला (एच ई एम आर एल), पुणे ने 01 मार्च 2015 को अपना वार्षिक दिवस मनाया। श्री बी भट्टाचार्य, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, एच ई एम आर एल ने इस अवसर पर कर्मचारियों एवं उनके परिवारों को शुभकामनाएँ दी। उन्होंने 2014 के दौरान प्रयोगशाला द्वारा अर्जित की गई उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। मेधावी कर्मचारियों को प्रयोगशाला स्तर के डी आर डी ओ पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त कर्मचारियों को उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए नकद पुरस्कार दिए गए। कर्मचारी जिन्होंने 25 वर्ष की सेवा अवधि पूर्ण की है, उन्हें भी सम्मानित किया गया। श्री बी भट्टाचार्य द्वारा सत्र 2014–15 के दौरान आयोजित किए गए खेलों के विजेताओं को भी ट्राफी प्रदान की गई।

एच ई एम आर एल के वार्षिक दिवस के अवसर पर श्री बी भट्टाचार्य कर्मियों को सम्बोधित करते हुए।

रक्षा इलैक्ट्रॉनिक्स अनुप्रयोग प्रयोगशाला (डील), देहरादून

रक्षा इलैक्ट्रॉनिक्स अनुप्रयोग प्रयोगशाला (डील), देहरादून ने 23 फ़रवरी 2015 को बड़े हर्षोल्लास से अपना वार्षिक दिवस मनाया। विभिन्न खेल प्रतियोगिताएं जैसे क्रिकेट, बैडमिंटन, कैरम, टेबल–टेनिस व अन्य खेलों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस समारोह के दौरान कर्मचारियों की प्रतिभा प्रस्तुत की गई। श्री आर सी अग्रवाल, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, डील ने

drdo.gov.in/drdo/pub/samachar/index.html

वार्षिक दिवस के अवसर पर डील के कार्मिकों के साथ श्री आर सी अग्रवाल, निदेशक, डील (दायें से आठवें) ।

मेधावी कर्मचारियों को प्रयोगशाला पुरस्कारों से सम्मानित किया।

यंत्र अनुसंधान तथा विकास स्थापना (आई आर डी ई), देहरादून

यंत्र अनुसंधान तथा विकास स्थापना (आई आर डी ई), देहरादून ने 18 फरवरी 2015 को अपना वार्षिकोत्सव मनाया। डॉ एस एस नेगी, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, आई आर डी ई, ने उपस्थित जनसमूह को शुभकामनाएँ दी। मेधावी कर्मचारियों को इस अवसर पर सम्मानित किया गया। इस उत्सव को मनाने के लिए वार्षिक खेल और अन्य कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इन कार्यक्रमों में अधिकारियों, कर्मचारियों और उनके परिवारजनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

डॉ एस एस नेगी, आई आर डी ई वार्षिक दिवस परेड का निरीक्षण करते हुए।

ई एम यू, दिल्ली, पूसा बागवानी प्रदर्शनी 2015 में विजयी

सम्पदा प्रबंधन इकाई (ई एम यू), (अनुसंधान तथा विकास) दिल्ली ने दिनांक 25 फरवरी–01 मार्च 2015 के दौरान दिल्ली कृषि बागवानी समिति द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आई ए आर आई), नई दिल्ली में आयोजित बगीचा प्रतियोगिता में 28 पुरस्कार जीते।

जीती गई ट्रॉफियां का विवरण इस प्रकार है – दिल्ली एवं नई दिल्ली के संस्थान, दूतावासों, होटलों एवं क्लबों से जुड़े हुए सबसे बड़े बगीचे के लिए वर्मा एंड कम्पनी चैलेंज कप ; दिल्ली एवं नई दिल्ली के संस्थान, दूतावासों, होटलों एवं क्लबों से जुड़े हुए सर्वोत्तम मध्यम, छोटे, एवं लघु बगीच के लिए डी ए एच एस चैलेंज कप; दिल्ली एवं नई दिल्ली के संस्थान, दूतावासों, होटलों एवं क्लबों से जुड़े हुए सर्वोत्तम छोटे, एवं लघु बगीचे के वर्ग में द्वितीय पुरस्कार ; सरकारी आवासों में छोटे बगीचे के लिए डी ए एच एस चैलेंज कप ; तथा दिल्ली एवं नई दिल्ली में सर्वोत्तम पौधे लगाने, कटे हुए फूलों एवं फूल की सजावट, जैसे कि रंगोली, फ्लोरा क्रॉफ्ट इत्यादि के लिए 18 अन्य पुरस्कार।

इसके अलावा ई एम यू हवाई वितरण अनुसंधान तथा विकास स्थापना (ए डी आर डी ई), अतिथि गृह एवं समुदाय केन्द्र, आगरा के सर्वोत्तम बगीचा ट्राफी भी जीती।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह

महान भारतीय भौतिकशास्त्री सर सी वी रमन के 28 फरवरी 1928 के दिन रमन प्रभाव की खोज के उपलक्ष्य में निम्नलिखित डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं ने राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया।

आयुध अनुसंधान तथा विकास स्थापना (ए आर डी ई), पुणे

डॉ सौरव पाल, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला (एन सी एल), पुणे राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पर मुख्य अतिथि थे। उन्होंने नई सामग्री और स्वच्छ वातावरण की दिशा में रसायन विज्ञान पर व्याख्यान दिया।

ए आर डी ई में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस व्याख्यान देते हुए डॉ सौरव पाल।

डॉ आर जे मुखेदकर, वैज्ञानिक एफ, ने राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पर ऑप्टिमाइजेशन सोल्यूशंस स्टडीज फार डब्लयू टी ए पी–मिलिट्री एप्लीकेशन पर व्याख्यान दिया। इस अवसर पर बेहतर अन्वेषण और पोस्टर प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कार वितरण किया गया।

उन्नत प्रणाली प्रयोगशाला (ए एस एल), हैदराबाद

उन्नत प्रणाली प्रयोगशाला (ए एस एल), हैदराबाद ने 3 मार्च 2015 को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया। डॉ आई श्रीकांत, वैज्ञानिक डी ने एयरोस्पेस और रक्षा अनुप्रयोगों में नैनो कम्पोजिट्स–उपलब्धियों और चुनौतियाँ पर राष्ट्रीय विज्ञान दिवस व्याख्यान दिया। डॉ टेसी थामस, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, ए एस एल ने सुवक्ता को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पदक और प्रमाण–पत्र प्रदान किया।

डॉ आई श्रीकांत को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस व्याख्यान प्रमाण–पत्र प्रदान करते हुए डॉ टेसी थॉमस।

वायुवाहित प्रणाली केंद्र (कैब्स), बैंगलूरु

श्री एम एस राजू, वैज्ञानिक डी, ने हवाई निगरानी प्रणाली के लिए 3 डी डिस्पले प्रौद्योगिकी पर राष्ट्रीय विज्ञान दिवस व्याख्यान दिया। डॉ क्रिस्टोफर, विशिष्ट वैज्ञानिक, कार्यक्रम निदेशक (अवाक्स) एवं निदेशक, वायुवाहित प्रणाली केंद्र (कैब्स), बैंगलूरु के द्वारा इन्हें राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पुरस्कार एवं प्रमाण–पत्र प्रदान किया गया।

संग्राम वाहन अनुसंधान तथा विकास स्थापना (सी वी आर डी ई), चेन्नई

संग्राम वाहन अनुसंधान तथा विकास स्थापना (सी वी आर डी ई), चेन्नई ने 27 फरवरी 2015 को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया। डॉ पी शिवकुमार, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, सी वी आर डी ई ने डी आर डी ओ विशेषकर सी वी आर डी ई द्वारा विकसित विभिन्न प्रौद्योगिकियों की संक्षिप्त जानकारी दी। विज्ञान

सी वी आर डी ई में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह का दृश्य।

drdo.gov.in/drdo/pub/samachar/index.html

दिवस के महत्व पर बल देते हुए उन्होंने बुनियादी अनुसंधान में युवा पीढ़ी की दिलचस्पी जगाने की जरूरत को बताया। श्री एन एस शेखर, वैज्ञानिक ई ने ट्रेक्ड बख्तरबंद गाडियों और आरामदायक सवारी विश्लेषण के लिए हाईड्रो–गैस संस्पेशन प्रणाली का विकास पर राष्ट्रीय विज्ञान दिवस व्याख्यान दिया। डॉ पी वसुंधरा, वैज्ञानिक सी, ने आभासी वास्तविकता पर एक तकनीकी व्याख्यान दिया। विज्ञान दिवस समारोह में विज्ञान प्रश्नोत्तरी, निबंध और पोस्टर प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। डॉ पी शिवकुमार ने विजेताओं को पुरस्कार से सम्मानित किया। श्री के अथावन, सचिव उत्सव समिति, ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया।

कृत्रिम ज्ञान तथा रोबोटिकी केंद्र (केयर), बैंगलूरू

श्री संजय बर्मन (बांये), निदेशक, केयर श्री अरशद जमाल को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस व्याख्यान प्रमाण–पत्र प्रदान करते हुए।

श्री अरशद जमाल, वैज्ञानिक ई, ने बड़े पैमाने पर वीडियो विश्लेषण और मान्यता पर राष्ट्रीय विज्ञान दिवस व्याख्यान दिया। अपने व्याख्यान में उन्होंने कहा कि दुनिया भर में सुरक्षा परिदृश्य के लिए संवेदनशील क्षेत्र में स्वायत्त निगरानी प्रणाली के विकास और तैनाती की आवश्यकता बताई, जिससे राष्ट्रीय सम्पदा की रक्षा हो सके। इस प्रक्रिया में बहुत अधिक मात्रा में चित्रात्मक आंकड़े संग्रहित होंगे, जिन्हें परिष्कृत करने की आवश्यकता होगी। उन्होंने दुनिया भर के विभिन्न प्रकार के विकसित वीडियो विश्लेषण और मान्य एलगोरिदम का सिंहावलोकन प्रस्तुत किया।

सैन्य उड़नयोग्यता तथा प्रमाणीकरण केंद्र (सेमीलेक), बैंगलूरू

श्री सेंथिल कुमार जी (बांये), श्री पी जयपाल, मुख्य कार्यकारी (ए), सेमीलेक से राष्ट्रीय विज्ञान दिवस व्याख्यान व्याख्यान प्रमाण–पत्र प्राप्त करते हुए।

श्री सेंथिल कुमार जी, वैज्ञानिक डी, ने फ्लैपिंग विंग के साथ जुड़े प्रवाह भौतिक विज्ञान की समझ पर राष्ट्रीय विज्ञान दिवस व्याख्यान दिया। इस व्याख्यान से सूक्ष्म वायु वाहनों के विकास में फ्लैपिंग फ्लाइट के संभावित अनुप्रयोग का पता चला।

रक्षा प्रयोगशाला (डी एल), जोधपुर

डॉ एस आर वढेरा (बांये), निदेशक, डी एल जे, डॉ अनुज शुक्ला को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस व्याख्यान प्रमाण–पत्र प्रदान करते हुए।

रक्षा प्रयोगशाला (डी एल), जोधपुर ने 10 फरवरी 2015 को स्कूली बच्चों के लिए विज्ञान

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया। इस प्रतियोगिता में जोधपुर व आस–पास के क्षेत्रों के विभिन्न स्कूलों के 9वीं और 11वीं कक्षाओं के लगभग 100 विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्रतियोगिताओं के विजेताओं को डॉ एस आर वडेरा, उत्कृष्ट वैज्ञानिक और निदेशक द्वारा सम्मानित किया गया। डॉ अनुज शुक्ला, वैज्ञानिक ई, ने माइक्रोवेव अवशोषित सामग्री पर राष्ट्रीय विज्ञान दिवस व्याख्यान दिया। डॉ वढेरा ने 2014 के दौरान दर्ज बेहतरीन विज्ञान आलेख, तकनीकी रिपोर्ट, पेटेंट/कापीराइट के वैज्ञानिक और कर्मचारियों को प्रमाण–पत्र वितरित किए।

डॉ एस पाल, कुलपति, डी आई ए टी, पुणे, श्री सुजॉय देबनाथ को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस व्याख्यान प्रमाण–पत्र प्रदान करते हुए।

रक्षा अनुसंधान तथा विकास स्थापना (डी आर डी ई), ग्वालियर

डॉ लोकेन्द्र सिंह (दांये), निदेशक, डी आर डी ई, राष्ट्रीय विज्ञान दिवस व्याख्यान प्रमाण–पत्र प्रदान करते हुए।

डॉ राहुल भट्टाचार्य, वैज्ञानिक एफ, ने साइनाइड–विषैलता का खतरा और उपचार पर राष्ट्रीय विज्ञान दिवस व्याख्यान दिया। डॉ लोकेन्द्र सिंह, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, डी आर डी ई ने डॉ भट्टाचार्य को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मेडल और प्रमाण–पत्र प्रदान किया।

उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला (एच ई एम आर एल), पुणे

उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला (एच ई एम आर एल), पुणे ने 27 फरवरी 2015 को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया। इस अवसर पर डॉ एस पाल, माननीय कुलपति, उन्नत प्रौद्योगिकी रक्षा संस्थान (डी आई ए टी), पुणे, मुख्य अतिथि थे। डॉ एस एन अस्थाना, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं कार्यकारी निदेशक, एच ई एम आर एल ने अपने भाषण में कहा कि विज्ञान दिवस उत्सव विज्ञान के महत्व को लोकप्रिय बनाने में तथा मानव जाति के लाभ के लिए इसे उपयोग करने में मदद करेगा। डॉ पाल ने अपने संबोधन में इसरो और डी आर डी ओ के योगदान पर प्रकाश डाला। उन्होंने युवा वैज्ञानिकों का नए विचारा. को सृजन करने के लिए आह्वान किया। श्री सुजॉय देबनाथ, वैज्ञानकि ई ने वायु वाहन की आत्म सुरक्षा के लिए पायरोटेकनीक इन्फ्रारेड डीकोय फ्लैयरस पर राष्ट्रीय विज्ञान दिवस व्याख्यान दिया। वक्ता ने आई आर डीकोय फलेयरस की आवश्यकता और युद्ध के दौरान विभिन्न लडाकू हवाई जहाजों की सुरक्षा में इनकी भूमिकाओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने एच ई एम आर एल में विभिन्न हवाई जहाजों के लिए विभिन्न आई आर डीकोय फ्लेयर्स के विकास की स्थिति को संक्षिप्त में बताया। उन्हें मुख्य अतिथि द्वारा राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मेडल और प्रमाण–पत्र प्रदान किया गया।

प्रौद्योगिकी प्रबंधन संस्थान (आई टी एम), मसूरी

प्रौद्योगिकी प्रबंधन संस्थान (आई टी एम), मसूरी ने राष्ट्रीय विज्ञान दिवस उत्सव को डी आर डी ओ की उपलब्धियों पर एक लघु वृत्तचित्र जारी करके मनाया। केन्द्रीय विद्यालय, सनातन धर्म गर्ल्स इंटर कालेज और

drdo.gov.in/drdo/pub/samachar/index.html

मसूरी गर्ल्स इंटर कालेज, मसूरी के स्कूली बच्चों के लिए एक विज्ञान प्रश्नोत्तरी आयोजित की गई। आधुनिक विज्ञान विषयों पर आशु व्याख्यान भी आयोजित किए गए। डॉ एस बी सिंह, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, आई टी एम ने सभा को संबोधित किया और नई पीढ़ी के बीच विज्ञानी मस्तिष्क और विज्ञान की भावना विकसित करने पर बल दिया। उन्होंने इस बात पर भी बल दिया कि विज्ञान सामाजिक उन्नति के सभी प्रश्नों का मूल सिद्धान्त है और इसलिए हमारा कर्तव्य है कि हमें सभी विद्यार्थियों के लिए विज्ञान को बढ़ावा देना चाहिए। आई टी एम के विज्ञान अध्ययन केन्द्र में एक समारोह का आयोजन किया गया जिसमें स्कूली बच्चों को विज्ञान के मूल सिद्धान्त बताए गए। सभी छात्रों को पुरस्कार वितरण के साथ इस कार्यक्रम का समापन हुआ।

नौसेना भौतिक तथा समुद्रविज्ञान प्रयोगशाला (एन पी ओ एल), कोच्चि

श्री एस अनंत नारायणन (बांये), निदेशक, एन पी ओ एल, डॉ आर राजेश को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस व्याख्यान प्रमाण–पत्र प्रदान करते हुए।

डॉ आर राजेश, वैज्ञानिक ई ने फाइबरऑप्टिक हाइड्रोफोन्स–भविष्य के उन्नत कॉम्पैक्ट पैसिव सोनार की पसंद पर राष्ट्रीय विज्ञान दिवस व्याख्यान दिया। यह व्याख्यान फाइबर ऑप्टिक हैड्रोफोन्स के अनुप्रयोगों, विशेषताओं, प्रकार का विशेषकर लघु सोनार्स पर लघु चर्चा करता है। श्री एस अनंत नारायणन, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, एन पी ओ एल ने भविष्य की प्रतिबद्धताओं, चुनौतियों तथा आशावान क्षमताओं की कार्यशाला पर केन्द्रित एन पी ओ एल पर मेरा दृष्टिकोण पर व्याख्यान दिया। उन्होनें राष्ट्रीय विज्ञान दिवस वक्ता को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस व्याख्यान प्रमाण–पत्र एवं मैडेल प्रदान किया। डॉ टी सांथाना कृष्णा, वैज्ञानिक ई, श्री के शशीकुमार, वैज्ञानिक डी, डॉ एन आर मनोज, वैज्ञानिक एफ, डॉ आर रमेश, वैज्ञानिक एफ और डॉ टी मुकन्दन, वैज्ञानिक एफ, जिन्हें उनके उत्पाद के लिए अमेरिका और भारतीय पेटेंट मिले थे, उन्हें इस अवसर पर सम्मानित किया गया।

नौसेना विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला (एन एस टी एल), विशाखापत्तनम

डॉ डी एन रेड्डी, अध्यक्ष, आर ए सी, एन एस टी एल में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का उद्घाटन करते हुए।

नौसेना विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला (एन एस टी एल), विशाखापत्तनम ने 27 फरवरी–02 मार्च 2015 के दौरान वैज्ञानिकों और विद्यार्थियों की सहभागिता से विज्ञान चर्चा, खुला घर प्रदर्शनी का आयोजन किया। डॉ डी एन रेड्डी, अध्यक्ष, भर्ती और मूल्यांकन केंद्र (आर ए सी), दिल्ली ने 27 फरवरी 2015 को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का उद्घाटन किया। श्री सी दुर्गा मालेश्वर, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, एन एस टी एल ने स्वागत भाषण में विज्ञान में अनुसंधान के महत्व को बढ़ावा देते हुए कहा कि इससे आम आदमी के लाभ के लिए अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों से उपयोग से जीवन की गुणवत्ता बेहतर की जा सकती है। उन्होंने नवोदित स्नातकों के रोजगारपूरक अंतर पर बल दिया और कहा 'कैसे इस मुद्दे का निवारण कर सकते हैं'। इस अवसर पर बोलते हुए डॉ डी एन रेड्डी ने उन विभिन्न प्रौद्योगिकी की खोज जो आरामदायक जीवन प्रोत्साहित करने में सहायक हैं, पर चर्चा की। उन्होंने भविष्य की कई प्रौद्योगिकियों तथा 21 वीं सदी तथा इससे आगे भी जीवन पर इनके प्रभाव पर विस्तृत चर्चा की। डी आर डी ओ दिवस के उत्सव पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विचार अभिव्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों को विद्यार्थियों में वैज्ञानिक

भावना विकसित करने में आवश्यक सहयोग प्रदान करना चाहिए। इस वर्ष विज्ञान दिवस के विषय 'राष्ट्र निर्माण में विज्ञान' पर श्री सी डी मालेश्वर ने एक कार्यक्रम टीमसोंग–प्रतिभा अन्वेषण, मूल्याकंन और नई पीढी के वैज्ञानिकों को प्रोत्साहन से नौजवानों में वैज्ञानिक भावना का निर्माण को शुरू किया। 50 अभियांत्रिकी महाविद्यालय, डिग्री महाविद्यालय और 20 स्कूलों को डिस्पले (प्रदर्शन) के लिए रखा गया। एन एस टी एल द्वारा विकसित विभिन्न प्रणालियाँ और इसकी सुविधाएँ आम जनता और विद्यार्थियों के लिए खोली गई। इसने विद्यार्थियों को उन्नत प्रौद्योगिकियों पर कार्यरत्त वैज्ञानिकों से मिलने का अवसर प्रदान किया। समारोह के एक भाग के रूप में, आंध्र अभियांत्रिकी विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एवं उप प्रमुख, डॉ पी एस अवधानी, ने सूचना प्रौद्योगिकी और समाज पर बात की। उन्होंने साइबर सुरक्षा, साइबर अपराध और संबंधित कानून के विभिन्न पहलुओं पर एक विस्तृत प्रस्तुति दी। इसके अलावा श्री एम श्रीनिवास वैज्ञानिक सी ने गर्मी उपचार द्वारा अल–अगो बैटरी के अल्युमीनियम एनोड पर हाइड्रोजन गैस उत्पत्ति की कमी पर राष्ट्रीय विज्ञान दिवस व्याख्यान दिया।

वाहन अनुसंधान तथा विकास स्थापना (वी आर डी ई), अहमदनगर

वाहन अनुसंधान तथा विकास स्थापना (वी आर डी ई), अहमदनगर ने कालेज विद्यार्थियों के लिए बहुत सारी प्रतियोगिताओं का आयोजन कर राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया। श्री एम डब्ल्यू त्रिकोंडो, प्रमुख सह निदेशक, वी आर डी ई ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। डॉ विजय भाटकर, भारत में सुपर कम्पयूटर के वास्तुकार को अतिथि वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया। उन्होंने सूचना प्रौद्योगिकी में वर्तमान प्रचलन पर व्याख्यान दिया और सुझाव दिया कि अगले साल से राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का विषय राष्ट्र निर्माण में विज्ञान होना चाहिए। श्री ए कन्नन, वैज्ञानिक सी, रक्षा अनुप्रयोगों के लिए जटरोफा आधारित बायो डीजल का उपयोग करके वाहन की कार्यक्षमता मूल्याकंन पर राष्ट्रीय विज्ञान दिवस व्याख्यान दिया। उन्होंने राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मेडल और प्रमाण–पत्र वितरित किए।

पुरस्कार

डॉ येलावर्ति नायूडामा स्मृति पुरस्कार

मुख्य अतिथि, प्रोफेसर शांता सिन्हा से पुरस्कार प्राप्त करते हुए डॉ टेसी थॉमस (बांये)।

डॉ टेसी थॉमस, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, उन्नत प्रणाली प्रयोगशाला (ए एस एल), हैदराबाद को प्रक्षेपास्त्र प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में दिए गए उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए डॉ वाई नायूडामा स्मृति न्यास, तेनाली, आंध्र प्रदेश द्वारा डॉ येलावर्ति नायूडामा स्मृति पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

सर्वोत्तम पुस्तकालयाध्यक्ष पुरस्कार

प्रोफेसर अरूण कुमार ग्रोवर से सर्वोत्तम पुस्तकालयाध्यक्ष पुरस्कार प्राप्त करते हुए डॉ राजीव विज (दांये)।

डॉ राजीव विज, वैज्ञानिक एफ, नाभिकीय औषधि तथा संबद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास), दिल्ली को 08–10 अप्रैल 2015 के दौरान पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में आयोजित 60वें अंतर्राष्ट्रीय आई एल ए सम्मेलन में सर्वोत्तम पुस्तकालयाध्यक्ष पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

drdo.gov.in/drdo/pub/samachar/index.html

सैन्य उड़नयोग्यता तथा प्रमाणीकरण केंद्र (सेमीलेक), बैंगलूरू

डॉ राजेन्द्र जोशी, स्वच्छता पर अपने विचार प्रकट करते हुए।

स्वच्छ भारत अभियान को जारी रखते हुए, सैन्य उड़नयोग्यता तथा प्रमाणीकरण केंद्र (सेमीलेक), बैंगलूरू ने डॉ राजेन्द्र जोशी, वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी, केन्द्रीय स्वास्थ्य सेवा को "सफाई अच्छे स्वास्थ्य को बढाती है" पर व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया गया। डॉ जोशी के व्याख्यान में एच 1 एन 1 और डेंगू विषय, इसके लक्षण और स्वच्छता के द्वारा इनकी रोकथाम शामिल रहा।

लेजर विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी केंद्र (लेसटेक), दिल्ली

स्वच्छता के प्रति जागरूकता और दिलचस्पी पैदा करने के लिए लेजर विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी केंद्र (लेसटेक), दिल्ली ने एक पदयात्रा का आयोजन किया। यह पदयात्रा लेसटक से शुरू होकर, अभिघात केन्द्र, श्रीराम रोड़ तथा अन्य समीप स्थानों से होती हुई वापस लेसटेक पर खत्म हुई। श्री एच बी श्रीवास्तव, निदेशक, लेसटेक ने लेसटेक के कर्मचारियों के साथ इस पदयात्रा का नेतृत्व

लेसटेक कर्मचारियों द्वारा स्वच्छ भारत रैली।

किया। बहुत सारे लोग आगे आए और स्वच्छ भारत अभियान को सुदृढ़ बनाने के लिए इस पदयात्रा में शामिल हुए।

प्रमाण तथा प्रायोगिकी स्थापना (पी एक्स ई), चांदीपुर

पी एक्स ई कर्मचारियों द्वारा स्वच्छ भारत जागरूकता हेतु पदयात्रा का दृश्य।

प्रमाण तथा प्रायोगिकी स्थापना (पी एक्स ई), चांदीपुर ने ग्रामीणों के बीच सफाई के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए बैनर और तख्तियों के साथ पास के एक स्थानीय गांव तक की पदयात्रा का आयोजन किया। पी एक्स ई में 31 मार्च 2015 को स्वच्छता पर चर्चा आयोजित की गई जिसमें 12 कर्मचारियों ने प्रतिभागिता की। सुश्री पूजा सिंह, हिंदी सहायक, को सबसे अच्छा कर्ता के रूप में सम्मानित किया गया।

नियुक्तियां

कुलपति, डी आई ए टी, पुणे

डॉ सुरेन्द्र पाल ने 03 फरवरी 2015 से उन्नत प्रौद्योगिकी संस्थान (डी आई ए टी), पुणे, मान्य विश्वविद्यायालय के नये कुलपति के रूप में पदभार ग्रहण किया।

एक अंतरिक्ष संचार प्रौद्योगिकीविद्, डॉ पाल महान ख्याति प्राप्त एक निपुण शोधकर्ता, विद्वान, प्रशासक और दूरदर्शी हैं। वह बिरला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलोजी एंड सांइस, पिलानी तथा भारतीय विज्ञान संस्थान, बंगलौर के भूतपूर्व छात्र हैं। वह प्रोफेसर सतीश धवन के पूर्व प्रोफेसर हैं, सैटेलाइट नेवीगेशन कार्यक्रम, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के वरिष्ठ सलाहकार हैं। वह सैटेलाइट नेवीगेशन कार्यक्रम इसरो उपग्रह केन्द्र, बैंगलूरू के विशिष्ट वैज्ञानिक, सह निदेशक तथा कार्यक्रम निदेशक भी हैं। वह इंस्टीट्यूशन ऑफ इलैक्ट्रॉनिक्स एवं टेलीकम्युनिकेशन इंजीनियर्स (इंडिया) के अध्यक्ष हैं।

डॉ पाल ने टाटा मूलभूत अनुसंधान संस्थान में कुछ समय कार्य करने के पश्चात 1971 में इसरो में पदभार ग्रहण किया। उन्होंने इसरो उपग्रह केन्द्र में माइक्रोवेव, एंटीना और आर एफ संचार से सम्बन्धित कार्यों को करने का जिम्मा लिया। वह आर्य भट्ट से लेकर आई आर एस, इनसैट, जीसेट, चन्द्रयान तथा स्पेसक्रॉफ्ट की लो अर्थ आ. रबिट सीरीज के लिये सभी भारतीय उपग्रह के जहाज पर दूरसंचार प्रणालियों के विकास के लिये जिम्मेदार थे। उनके द्वारा मेंटर्ड टीम ने मंगलयान (कम्यूनिकेशन सिस्टम) के लिये कार्य किया। उन्होंने भारत में उपग्रह आधारित नेविगेशन गतिविधियों में अग्रणी भूमिका निभाई। उन्होंने भारतीय उपग्रह आधारित वाइड एरिया विस्तार प्रणाली, गगन (जी पी एस एडेड जियो संवर्धित नेविगेशन सिस्टम) प्रारम्भ से पूर्ण होने तक; भारतीय क्षेत्रीय नेवीगेशन सेटेलाइट सिस्टम (IRNSS) सिविलियन तथा प्रतिबंधित उपयोगकर्ताओं के लिये कार्य किया। डी जी सी ए के द्वारा प्रमाणीकरण के बाद ही नागरिक उड्डयन के लिये गगन सिस्टम कार्य कर रहा है। IRNSS चार उपग्रह कक्षा में है। वह भारत में उपग्रह नेविगेशन कार्यक्रम के सर्जक हैं। उनके द्वारा शुरू किये गये कार्यक्रम, एशिया प्रशांत क्षेत्र तथा भारतीय सुरक्षा सेवाओं में GNSS उपयोगकर्ताओं हेतु प्रभावी एवं लाभकारी होगा। इसरो में अपने 42 साल के कैरियर के दौरान उन्होंने कई नई प्रौद्योगिकी विकसित की जो अन्य विश्व अंतरिक्ष एजेंसियों के लिये महत्वपूर्ण हैं। ऐसा एक उदाहरण सेटेलाइट आधारित स्फेरिकल फेस्ड अरे है जो IRS की तरह उपग्रह की परिक्रमा के लिये दो जमीनी स्टेशनों पर दो बीम में सिगनल ट्रांसमिट करते हैं।

डॉ पाल अपने तकनीकी ज्ञान के लिये व्यापक रूप से सम्मानित हैं। विभिन्न क्षेत्रों में अपनी विशेषज्ञता के लिये राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय संगठनों द्वारा उपयोग किये जाते हैं। लियो–सैट मोबाइल उपग्रह संचार परिभाषा के लिये INMAR SAT/ ICO (UK) का प्रयोग होता है। ICO (UK) के लिये सैटेलाइट हस्त पकड़ एंटीना प्रणाली का विकास, क्षेत्रीय अफ्रीकन उपग्रह संचार प्रणाली विकसित करने हेतु अंतरराष्ट्रीय दूरसंचार संघ (आई टी यू) X–सेट इत्यादि पर नानयांग प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, सिंगापुर द्वारा उनका तकनीकी ज्ञान उपयोग हुआ है। वह ग्लोबल नेवीगेशन सेटेलाइट सिस्टम (GNSS) पर विशेषज्ञों की संयुक्त राष्ट्र के पेनल पर थे। उन्होंने वियना, जिनेवा तथा अन्य अंतरराष्ट्रीय स्थानों पर संयुक्त राष्ट्र के विभिन्न बैठकों में भाग लिया। उन्होंने डी आर डी ओ के लिये भी विभिन्न एन्टीना विकसित किये हैं।

drdo.gov.in/drdo/pub/samachar/index.html

डॉ पाल आई ई टी ई के विशिष्ट फैलो सदस्य हैं। इंडियन नेशनल एकेडमी ऑफ इंजीनियरिंग के फैलो हैं। इंडियन नेशनल एकाडमी ऑफ साइंस के फैलो हैं। IEEE (USA), IET (UK), MIAA (Paris), FVEDA, MASI के फैलों हैं। इन्होंने 22 से भी अधिक राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किये हैं, जैसे सारा भाई अनुसंधान पुरस्कार, ओमप्रकाश भसीन फाडंडेशन पुरस्कार, इसरो/डॉस पुरस्कार, बिट्स पिलानी गणमान्य पूर्व छात्र पुरस्कार। वह फ्रांस के IEEE–2010 जूधिच, Resnik प्रतिष्ठित पुरस्कार पाने वाले भारतीय राष्ट्रीय एवं प्रथम पेशेवर हैं। इसके अलावा, वह अपने विभिन्न आविष्कारों के लिये पेटेंट रखते है। उन्होंने राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं तथा ख्याति के सम्मेलनों में 220 से अधिक प्रपत्र प्रस्तुत/प्रकाशित किये। आपने संचार पर एक पुस्तक लिखी तथा पी एच डी छात्रों को निर्देशित किया। वह इंडियन नेशनल एकेडमी ऑफ इंजीनियरिंग के प्रतिष्ठित विजिटिंग प्रोफेसर हैं। वर्तमान में वह IEEE-DLT योजना के अंतर्गत विशिष्ट व्याख्याता हैं। जो आमंत्रित वार्ता व्याख्यान, तथा ट्यूटोरियल को करते हैं जो एंटीना, GNSS, Space तथा RF संचार प्रणाली आदि विषय पर हैं। वह नवगठित आई सी टी के संस्थान, अहमदाबाद विश्वविद्यालय, गुजरात, बी आई टी एस पिलानी के आई सी टी पाठ्यक्रम और अन्य शैक्षिक मामलों पर एक वरिष्ठ सलाहकार हैं। डॉ पाल बहुत से भारतीय विश्वविद्यालयों के मानद प्रोफेसर हैं।

आपकी रूचि के क्षेत्रों में आर एफ संचार, अंतरिक्ष संचार, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, माइक्रोवेव, इलैक्ट्रोमेग्नेटिक्स, एंटीना, रडार, डिजिटल संचार और सैटेलाइट नेविगेशन (GNSS) हैं। आपको अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इन क्षेत्रों में एक विशेषज्ञ के रूप में मान्यता प्राप्त है।

निदेशक, रक्षा उच्च तुंगता अनुसंधान संस्थान (डिहार), लेह

डॉ भुवनेश कुमार, वैज्ञानिक जी ने 01 मार्च 2015 से रक्षा उच्च तुंगता अनुसंधान संस्थान (डिहार), लेह का निदेशक के रूप में पदभार ग्रहण किया। उन्होंने 1984 में अपनी मास्टर डिग्री पशु चिकित्सा में जी बी पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर से तथा पी एच डी (पशु दवा) 1999 में उसी विश्वविद्यालय से प्राप्त किया।

आपने रक्षा कृषि अनुसंधान प्रयोगशाला, अल्मोड़ा (अब जैव ऊर्जा अनुंसधान, हल्द्वानी) में वैज्ञानिक बी के पद पर फरवरी 1985 में पद्भार ग्रहण किया। और विभिन्न स्थानों जैसे पिथौरागढ़, किन्नौर तथा लाहौल स्फीति, जो इंडो तिब्बत तथा नेपाल की सीमा पर हैं, 21 वर्षों तक कार्य किया। दूरदराज के पहाड़ी क्षेत्रों में तैनान सैनिकों के लिये ताजा भोजन की उपलब्धता बढ़ाने के लिये कृषि–पशु तकनीक को बढ़ावा देने हेतु कार्य किया।

डॉ भुवनेश कुमार ने जीव विज्ञान क्लस्टर की ओर से जी–फास्ट के सदस्य के रूप में कार्य किया। कम तीव्रता संघर्ष के कार्यक्रम निदेशक तथा निदेशक, पी एम (जीव विज्ञान) के रूप में भी कार्य किया है। आपको पश्चिमी, मध्य और उत्तर–पूर्व हिमालय के पहाड़ी क्षेत्रों में काम करने का व्यापक अनुभव है।

उन्होंने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में 50 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित किये और विभिन्न राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में शोध के निष्कर्षों को प्रस्तुत किया। उन्होंने कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों की अध्यक्षता अथवा सह–अध्यक्षता की। वह विभिन्न व्यावसायिक सोसाइटी के सदस्य हैं। आपने 1998 में डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम, वैज्ञानिक सलाहकार से प्रशस्ति पत्र प्राप्त किया और सन् 2005 में आपको अग्नि पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

निदेशक, डिहार के रूप में उनका ध्यान ताजा भोजन की उपलब्धता को बढ़ावा देने के लिये कृषि–पशु तकनीक विकसित करके उत्तर–पूर्वी हिमालय में पश्चिमी हिमालय और तवांग में सियाचिन ग्लेशियर आधार को मजबूत करने में रहेगा।

आयुध अनुसंधान तथा विकास स्थापना (ए आर डी ई), पुणे

कोमोडोर (सेवानिवृत्त) एस के पटेल, साफ–सफाई पर अपने विचार प्रकट करते हुए।

आयुध अनुसंधान तथा विकास स्थापना (ए आर डी ई), पुणे द्वारा 04–10 मार्च 2015 के दौरान 44वां राष्ट्रीय सुरक्षा सप्ताह मनाया गया। इस अवसर पर कोमोडोर (सेवानिवृत्त) एस के पटेल, निदेशक, डी क्यू आर एस, डी आर डी ओ मुख्यालय, ने सुरक्षा पर अतिथि व्याख्यान दिया। समारोह के एक भाग के रूप में, ए आर डी ई के सभी कार्मिकों के लिए सुरक्षा पहलुओं पर निबंध, स्लोगन एवं चित्रकारी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। सभी विजेताओं को नकद पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर सी पी आर आपातकालीन प्रभाव सहित प्राथमिक सहायता पर एक विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया।

उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला (एच ई एम आर एल), पुणे

उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला (एच ई एम आर एल), पुणे द्वारा 04–10 मार्च 2015 के दौरान राष्ट्रीय सुरक्षा सप्ताह मनाया गया। इस अवसर पर बहुत से कार्यक्रमों का आयोजन किया गया एवं सभी कार्मिकों

डॉ एस एन अस्थाना (दांये), उत्कृष्ट वैज्ञानिक, सुरक्षा, स्वास्थ्य एवं पर्यावरण पत्रिका का विमोचन करते हुए।

को सुरक्षा चिन्ह एवं सुरक्षा सामग्री प्रदान की गई। विभिन्न वर्गों में सुरक्षा प्रश्नोत्तरी का भी आयोजन किया गया। प्रत्येक वर्ग के प्रथम तीन विजेताओं को पुरस्कार एवं प्रमाण–पत्र से सम्मानित किया गया। सुरक्षा, अंग्रेजी, हिन्दी एवं मराठी में स्वास्थ्य एवं पर्यावरण पर स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया तथा तीनों भाषाओं में तीन सर्वोत्तम स्लोगनों को पुरस्कार एवं प्रमाण–पत्र से सम्मानित किया गया। सुरक्षा, स्वास्थ्य एवं पर्यावरण से संबंधित विभिन्न प्रकार के आलेखों की एक पत्रिका का विमोचन किया गया तथा पत्रिका के सर्वोत्तम आलेखों को पुरस्कृत किया गया।

एकीकृत परीक्षण रेंज (आई टी आर), चांदीपुर

राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस के अवसर पर आई टी आर में सुरक्षा एवं स्वास्थ्य की शपथ लेते हुए अधिकारीगण।

एकीकृत परीक्षण रेंज (आई टी आर), चांदीपुर द्वारा 04–10 मार्च 2015 के दौरान राष्ट्रीय सुरक्षा सप्ताह

drdo.gov.in/drdo/pub/samachar/index.html

एन पी ओ एल में राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस के अवसर पर सुरक्षा एवं स्वास्थ्य की शपथ लेते हुए अधिकारी एवं कर्मचारीगण।

मनाया गया। श्री एम वी भास्कराचार्य, वैज्ञानिक जी, सह निदेशक ने इस कार्यक्रम का उद्घाटन किया तथा सभी कार्मिकों को सुरक्षा एवं स्वास्थ्य पर एक शपथ भी दिलाई। इस अवसर पर श्री जीबन महापात्र, डी जी एम एवं ई एस, नाल्को, बी बी एस आर मुख्य अतिथि थे। आपने भारत में सुरक्षा, स्वास्थ्य एवं पर्यावरण कारणों का मूल्यांकन विषय पर अपने विचार प्रकट किए तथा डी आर डी ओ की नई सामरिक परियोजनाओं के आवश्यक पर्यावरण क्लीयरेंस पर प्रकाश डाला।

उच्च अर्हता प्राप्ति

उन्नत प्रणाली प्रयोगशाला (ए एस एल), हैदराबाद

श्री खलाने संजय आनंदराव, वैज्ञानिक एफ, उन्नत प्रणाली प्रयोगशाला (ए एस एल), हैदराबाद को जवाहर लाल नेहरू प्रौद्योगिकीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद द्वारा यांत्रिक अभियांत्रिकी में स्टेबिलिटी एंड वाइब्रेशन एनालिसिस ऑफ फंक्शनली ग्रेडिड मैट्रीयल स्ट्रक्चर्स इनक्लूडिंग जियोमैट्रिक नॉन लिनियरिटी नामक उनके शोध प्रबंध के लिए पी एच डी की उपाधि से सम्मानित किया गया।

कृत्रिम ज्ञान तथा रोबोटिकी केंद्र (केयर), बैंगलूरू

श्री पी मुरली कृष्ण, वैज्ञानिक ई, कृत्रिम ज्ञान तथा रोबोटिकी केंद्र (केयर), बैंगलूरू को भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, हैदराबाद द्वारा यांत्रिक अभियांत्रिकी में एनर्जेटिक एंड पैसिव डाइनेमिक्स ऑफ क्वाड्रप्ड रोबोट प्लेनर रनिंग गेट्स नामक उनके शोध प्रबंध के लिए पी एच डी की उपाधि से सम्मानित किया गया।

उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला (एच ई एम आर एल), पुणे

कर्नल सुल्तान सिंह मलिक (सेवानिवृत्त), उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला (एच ई एम आर एल), पुणे को सावित्री बाई फूले पुणे विश्वविद्यालय द्वारा स्टडीज ऑन डिस्पोजल ऑफ कम्बस्टीबल कार्ट्रिज केस बॉय एल्केलाइन हाइड्रोलिसिस एंड एप्लीकेशन ऑफ इट्स हाइड्रोलिसेट एज फर्टीलाइजर फॉर क्रॉप नामक उनके शोध प्रबंध के लिए पी एच डी की उपाधि से सम्मानित किया गया।

अनुवाद पाठ्यक्रम

वैमानिकी विकास स्थापना (ए डी ई), बैंगलूरू में 23–27 फरवरी 2015 को केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, बैंगलूरू द्वारा एक पांच दिवसीय अनुवाद पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। उद्घाटन कार्यक्रम की शुरूआत स्तुति गान और दीप प्रज्जवलन के साथ हुआ।

श्री पी शिवकुमार, उद्घाटन उद्बोधन देते हुए।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में श्री पी श्रीकुमार, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, ए डी ई ने सभी प्रतिभागियों को पाठ्यक्रम का अत्यन्त उपयोग करने और राजभाषा कार्यान्वन करने के लिए प्रोत्साहित किया। सभी संवर्गो के कुल 24 अधिकारियों/कर्मचारियों ने इस पाठ्यक्रम से फायदा लिया। प्रतिभागियों ने हिंदी की संवैधानिक स्थिति, प्रकृति और अनुवाद कार्य प्रणाली, आधिकारिक अनुवाद, हिन्दी–अंग्रेजी शब्दावली इत्यादि के साथ अभ्यास सत्र से ज्ञान अर्जित किया।

मुक्त स्त्रोत घटकों की आश्वासन आवश्यकता पर सतत् शिक्षा कार्यक्रम (सी ई पी)

कृत्रिम ज्ञान तथा रोबोटिकी केंद्र (केयर), बैंगलूरू ने 23–27 फरवरी 2015 के दौरान डी आर डी ओ के सतत् शिक्षा कार्यक्रम (सी ई पी) लक्ष्य संवेदनशीन प्रणाली में अनाधिकारिक और मुक्त स्त्रोत घटकों की आश्वासन आवश्यकता का आयोजन किया। तीन सेवा कर्मियों सहित उन्नीस प्रतिभागियों ने पाठ्यक्रम में भाग लिया। श्री विनय अग्रवाल, वैज्ञानिक ई, पाठ्यक्रम निदेशक, ने पाठ्यक्रम के उद्देश्य को बताया जिसका लक्ष्य मिशन संवेदक प्रणालियों हेतु मुक्त स्त्रोत

श्री संजय बर्गन, निदेशक, केयर प्रतिभागियों के साथ (बीच में)।

सॉफ्टवेयर और अनाधिकारिक घटकों के उपयोग के संदर्भ में मुद्दों, चुनौतियों पर गहन प्रकाश डालना था।

विद्वान शिक्षकों जिसमें ऐसे वैज्ञानिक हैं जिन्हें सम्बन्धित कार्यक्षेत्र में अनुभव है, सैन्य–कर्मियों और प्रख्यात उद्योगों के वक्ताओं द्वारा 24 व्याख्यान दिए गए, जो आश्वासन आवश्यकता से संबंधित विभिन्न पहलुओं जैसे लक्ष्य संवेदनशील प्रणालियों, अनाधिकारिक और मुक्त स्त्रोत घटको की सुरक्षा, सोर्स और एक्सीक्यूटेबल कोड में कमियों को ढूंढने की विश्लेषण तकनीक में अनाधिकारिक और मुक्त स्त्रोत घटक सुरक्षा, विश्वसनीयता, जीवित बने रहना, निर्भरता और उपलब्धता को बताते हैं।

डी आर डी ओ के संगठनात्मक उद्देश्य के लिए डी आर टी सी और प्रशासनिक/अन्य कर्मचारियों के प्रशिक्षण कार्यक्रम पर कार्यशाला

कार्मिक प्रतिभा प्रबंधन केन्द्र (सेपटेम), दिल्ली ने 04 मार्च 2015 को डी आर डी ओ के संगठनात्मक उद्देश्य के लिए डी आर टी सी और प्रशासनिक/अन्य कर्मचारियों के प्रशिक्षण कार्यक्रम पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला का उद्देश्य प्रशिक्षण

डॉ हिना गोखले कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए।

drdo.gov.in/drdo/pub/samachar/index.html

पद्धति, कंटेंट, शिक्षक, अवधि और स्थल इत्यादि को संगठनात्मक आवश्यकताओं के अनुसार तैयार करना था। इस कार्यशाला का उद्घाटन ड़ॉ हिना गोखले, निदेशक, मानव संसाधन विकास निदेशालय, डी आर डी ओ मुख्यालय ने श्री आर बी सिंह, अध्यक्ष, सेपटेम और श्री सुधीर गुप्ता, निदेशक, सेपटेम की उपस्थिति में किया।

महानिदेशक समूहों के प्रतिनिधि, मानव संसाधन विकास निदेशालय, कार्मिक निदेशालय, डी बी एफ ए, योजना एवं समन्वय निदेशालय, आर टी आई, सतर्कता, डी आर डी ओ प्रशिक्षण संस्थान, जोधपुर, लक्ष्यित प्रशिक्षण केन्द्र, बैंगलूरू, आई टी एम और इनमास, सीफीस, ईसा, लेसटेक, एस एस पी एल, डी आई पी आर और एस पी आई सी के प्रतिनिधियों ने कार्यशाला में भाग लिया। उद्घाटन कार्यक्रम में वर्ष 2015–16 के लिए सेप्टम के प्रशिक्षण कैलेंडर का विमोचन किया गया।

इस कार्यशाला से सेप्टम में अभिमुखीकरण और तकनीकी प्रशिक्षण हेतु आवश्यक दो सप्ताह कार्यक्रम के लिए नए प्रवेशकों के प्रवेश प्रशिक्षण के लिए बदलाव/ इनपुट प्राप्त हुआ।

इन इनपुट से सेपटेम को सम्बन्धित संवर्ग के प्रशिक्षण कार्यक्रम की समीक्षा करने का मार्गदर्शन मिला। इस कार्यशाला ने भविष्य में होने वाले संवाद की आवश्यकता पर प्रकाश डाला।

प्रजातिगत वाहन संरचना पर कार्यशाला

प्रजातिगत वाहन संरचना पर 25–26 फरवरी 2015 के दौरान एक दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन डी आर डी ओ मुख्यालय, नई दिल्ली में डी आई सी और टी सी जी (वाहन) द्वारा महानिदेशक (ए सी ई) और मुख्य नियंत्रक अनुसंधान एवं विकास (पी सी एंड एस आई) की सलाह पर भारत–यू के की सरकार के सहयोग के तहत किया गया। रक्षा विज्ञान और प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला (डी एस टी एल), रक्षा मंत्रालय, यू के, डी आर डी ओ मुख्यालय, भारतीय सेना, संग्राम वाहन अनुसंधान तथा विकास स्थापना (सी वी आर डी ई), चेन्नई; वाहन अनुसंधान तथा विकास स्थापना (वी आर डी ई), अहमदनगर; यंत्र अनुसंधान तथा विकास स्थापना (आई आर डी ई), देहरादून; अनुसंधान तथा विकास स्थापना (इंजीनियर्स) (आर एंड डी ई (इंजी)), पुणे; इलैक्ट्रॉनिक्स तथा रडार विकास स्थापना (एल आर डी ई), बैंगलूरू; रक्षा पी एस यू जैसे बी ई एम एल, बैंगलूरू और बी ई एल, चेन्नई के वरिष्ठ अधिकारियों

प्रजातिगत वाहन संरचना पर आयोजित कार्यशाला का दृश्य।

के 35 प्रतिनिधियों ने इस कार्यशाला में सक्रिय रूप से भाग लिया।

डी एस टी एल टीम का श्री रिचर्ड हूपर, परियोजना मार्गदर्शक ने श्री रॉस जोन्स, सी सी एस कार्यक्रम प्रबन्धक और श्री बेनेट मैकनमरा, एम सी एस परियोजना तकनीकी मार्गदर्शक के साथ नेतृत्व किया। आंगतुकों ने कार्यशाला शुरू करने से पहले डॉ सुदर्शन कुमार, विशिष्ट वैज्ञानिक, मुख्य नियंत्रक अनुसंधान एवं विकास (पी सी एण्ड एस आई) से मुलाकात की। उन्होंने यू के, रक्षा मंत्रालय के विशेषज्ञों की कार्यशाला संचालन के लिए प्रंशसा की। भारतीय टीम का श्री बैंजामिन लाइनोल, निदेशक तकनीक (वाहन) ने नेतृत्व किया जो प्रस्तावित जी वी ए कार्यक्रम के लिए सम्पर्क सूत्र है।

श्री एस एन यादव, अपर निदेशक, टी सी जी, डी आर डी ओ मुख्यालय, कार्यशाला समन्वयक थे। कार्यशाला का उद्देश्य जी वी ए जो मुक्त, मॉडयूलर और मापनीय इलैक्ट्रॉनिक और जमीनी हथियारों के प्लेटफार्म की भौतिक संरचना बताता है कि जागरूकता फैलाकर उद्योगों और शिक्षण समुदाय के सहयोग से वाहन के दक्ष डिजाइन को प्रोत्साहित करने में और इसके जीवनकाल के दौरान किफायती अद्यतन को सक्रिय किया जा सके। विचार–विमर्श के उद्देश्यों में डी आर डी ओ का परिचय और लडाकू वाहनों के क्षेत्र की गतिविधियाँ, यूके दल द्वारा डी एस टी एल, यू के का परिचय, यूके दल द्वारा जी वी ए का सम्पूर्ण अवलोकन और इसके फायदे, यू के दल द्वारा उनके हिस्से पर वैटरोनिक्स के क्षेत्र का अनुसंधान क्षेत्र और जी वी ए मानक और इसकी स्थापत्य, मुद्दों और संभावनाओं का विस्तृत विचार–विमर्श शामिल है। इस अवसर पर भविष्य की कार्रवाई की योजना की रूप–रेखा पर भी निर्णय लिया गया।

ई सी एस समूह बैठक

रक्षा इलैक्ट्रॉनिक्स प्रयोज्यता प्रयोगशाला (डील), देहरादून ने 14 मार्च 2015 को डी आर डी ओ के

श्री सुंदरम को डील में चल रही परियोजना से अवगत कराया जा रहा है।

इलैक्ट्रॉनिक प्रयोगशाला समूह की बैठक का आयोजन किया। इस बैठक की अध्यक्षता श्री एस एस सुन्दरम, महानिदेशक, ई सी एस द्वारा की गई और इसमें रक्षा उड्डयानिकी अनुसंधान स्थापना (डेयर), बैंगलूरू, डील, ठोसावस्था भौतिकी प्रयोगशाला (एस एस पी एल), दिल्ली और यंत्र अनुसंधान तथा विकास स्थापना (आई आर डी ई), देहरादून के निदेशकों ने प्रतिभागिता की। अन्य ई सी एस प्रयोगशालाएं इसमें टेली–कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जुड़ीं। श्री सुन्दरम को वर्तमान परियोजनाओं जिसमें सॉफ्टवेयर परिभाषित रेडियो (एस डी आर), वी एल एफ संचार प्रणाली और एकीकृत तटीय निगरानी प्रणाली से अवगत कराया गया।

कॉर्पोरेट समीक्षा समिति की बैठक

लेफ्टिनेंट जनरल अनूप मल्होत्रा, मुख्य नियंत्रक आर एंड डी (आर एंड एम) की अध्यक्षता में रक्षा प्रयोगशाला (डी एल), जोधपुर में 02 मार्च 2015 को कॉर्पोरेट समीक्षा समिति की बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में डी आर डी ओ के कॉर्पोरेट समीक्षा समिति के सदस्यों ने भाग लिया। श्रीमती नबनीता आर कृष्णन, निदेशक, योजना एवं समन्वय निदेशालय, डी आर डी ओ मुख्यालय ने परिचयात्मक टिप्पणी दी।

डी एल जे में आयोजित कारपोरेट समीक्षा बैठक का दृश्य।

डॉ वी भुजंगाराव राव, विशिष्ट वैज्ञानिक, महानिदेशक (एन एस एंड एम) ने कॉर्पोरेट समीक्षा समिति की तरफ से सभी सदस्यों का स्वागत किया। अध्यक्ष ने डी आर डी ओ मुख्यालय द्वारा दिए गए उद्देश्यों और चार्टर को श्रमशक्ति, साम्रगी प्रबन्धन, बजट एवं वित्त और प्रयोगशाला से सम्बन्धित अन्य मुद्दों पर चर्चा के लिए संक्षेप में बताया। डॉ एस आर वढेरा, विशिष्ट वैज्ञानिक, निदेशक, डी एल जे ने डी एल जे की संरचना, वर्तमान परियोजनाओं की स्थिति, भविष्य की परियोजनाओं और मानव संसाधन, निर्माण, वित्त से सम्बन्धित मुद्दों इत्यादि पर एक प्रस्तुति दी।

सरकारी कामकाज में सहज एवं सरस हिंदी पर कार्यशाला

डील में आयोजित सरकारी कामकाज में सहज एवं सरस हिंदी पर कार्यशाला का दृश्य।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा 25 मार्च 2015 को वरिष्ठ तकनीकी सहायकों तकनीकी सहायकों और तकनीशियनों के लिए एक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का विषय सरकारी कामकाज में सहज एवं सरस हिंदी था। कार्यशाला का संचालन श्री अनुपम पांडेय, सहायक पासपोर्ट अधिकारी द्वारा किया गया।

संचार ई एस एम प्रौद्योगिकी पर सत्तत शिक्षा पाठ्यक्रम

रक्षा इलैक्ट्रॉनिक्स अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एल आर एल), हैदराबाद ने 16–20 मार्च 2015 के दौरान संचार ई एस एम प्रौद्योगिकी पर एक सी ई पी पाठ्यक्रम का आयोजन किया। डॉ सी जी बालाजी, उत्कृष्ट वैज्ञानिक, निदेशक, डी एल आर एल ने

डॉ सी जी बालाजी (बांये से दूसरे), पाठ्यक्रम सामग्री का विमोचन करते हुए।

पाठ्यक्रम का उद्घाटन किया और पाठ्यक्रम सामग्री का विमोचन किया। अपने उद्घाटन भाषण में श्री बालाजी ने इलैक्ट्रॉनिक युद्ध प्रणालियों के लिए संचार ई एस एम टेक्नोलॉजीज के महत्व पर बल दिया। प्रख्यात शिक्षाविदों, औद्योगिक विशेषज्ञों और डी एल आर एल के वैज्ञानिकों के द्वारा 16 तकनीकी व्याख्यान दिए गए। कोर्स के दौरान पढे गए विषयों में आधारभूत संचार से लेकर संचार के क्षेत्र में नवीनतम प्रचलन जैसे मल्टीपल इनपुट मल्टीपल आऊटपुट (मीमो) प्रौद्योगिकी और इसके फायदे, वायरलैस संचार इत्यादि शामिल थे। इसमें संचार ई एस एम प्रणाली जैसे एंटीना, पैकेजिंग और थर्मल विश्लेषण और योग्यता अवधारणाएं हेतु इलैक्ट्रॉनिक सहायक प्रौद्योगिकियाँ शामिल थी, की तरह यह भी एंटेना, पैकेजिंग और थर्मल विश्लेषण और योग्यता पहलुओं की तरह कॉम ई एस एम प्रणालियों के लिए इलैक्ट्रॉनिक समर्थन टेक्नोलॉजीज शामिल थे। एस आई निदेशालय, बी ई एल हैदराबाद, और विभिन्न डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं के पच्चीस प्रतिभागियों ने पाठ्यक्रम में भाग लिया। सुश्री के अनीता, वैज्ञानिक एफ, पाठ्यक्रम की निदेशक और सुश्री पी उषा रानी, वैज्ञानिक एफ, पाठ्यक्रम समन्वयक थी।

सामग्री विज्ञान और बॉयोमीट्रिक प्रौद्योगिकी में सूक्ष्मदर्शिकी पर सम्मेलन

सूक्ष्मदर्शी विज्ञान और प्रौद्योगिकी (ए एम एस टी) अकादमी शोधार्थियों, वैज्ञानिकों और प्रौद्योगिकीविदो को अपने विचार साझा करने और सहयोग बढ़ाने के लिए एक प्लेटफार्म प्रदान करती है, जिससे सामग्री विज्ञान, जीवन विज्ञान और इंस्ट्रूमेंटेशन में बहुआयामी विकास प्राप्त किया जा सकता है।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी के वर्तमान प्रचलन में नए बहुकार्यी साम्रगी का विकास करके एक उत्पाद में

ए एम एस टी सम्मेलन के उद्घाटन सत्र का दृश्य।

विभिन्न गुणों की प्रौद्योगिकियों को समायोजित किया जा सके और उससे शोध को सफलतापूर्वक किया जा सके। ए एम एस टी ने 26–28 फरवरी 2015 के दौरान रक्षा सामग्री एंव भण्डार अनुसंधान तथा विकास स्थापना (डी एम एस आर डी ई), कानपुर में सामग्री विज्ञान और बॉयोमीट्रिक प्रौद्योगिकी में सूक्ष्मदर्शिकी पर सम्मेलन आयोजित किया गया।

इस सम्मेलन का उद्देश्य साम्रगी विज्ञान, जीवन विज्ञान और इन्सट्रूमेंटेशन के सभी शिक्षाविदो, वैज्ञानिकों और प्रौद्योगिकीविदो को एक कामन प्लेटफार्म उपलब्ध कराना था क्योंकि सामग्री विज्ञान और जीवन विज्ञान में प्रगति सूक्ष्मदर्शिका की प्रगति पर निर्भर करती है। विभिन्न प्रयोगशालाओं में सूक्ष्मदर्शियों की संख्या में तीव्र वृद्धि के कारण इन मशीनों को कुशलतापूर्वक चलाने के लिए प्रशिक्षित और योग्य श्रमशक्ति और शोधार्थियों और एस ई एम, टी ई एम इत्यादि के विद्यार्थियों को प्रशिक्षण की आवश्यकता हैं। यह सम्मेलन अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशालाओं, शिक्षण समुदाय, उद्योगों और उपभोक्ता एजेंसियों को एक कॉमन मंच प्रदान करता है और वर्तमान स्थिति और आगे आने वाले विभिन्न चुनौतियों और अवसरों पर चर्चा करता है।

ठोस प्रणोदक प्रणाली में प्रगति पर अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला–2015

उच्च ऊर्जा सामग्री अनुसंधान प्रयोगशाला, पुणे ने उच्च ऊर्जा साम्रगी सोसायटी आफ इंडिया के सहयोग से 12–13 मार्च 2015 के दौरान ठोस प्रणोदक प्रणाली में प्रगति पर अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला–2015 (आई डब्ल्यू ए पी एस–2015) का आयोजन डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम सभागार, पाषाण में किया।

ठोस प्रणोदक प्रणाली पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला के उद्घाटन सत्र का दृश्य।

इस कार्यशाला का उद्देश्य वैज्ञानिकों, प्रौद्योगिकीविदों, शिक्षाविदों और उद्योगों को एक मंच प्रदान करना था जिससे वो एक साथ आ सके और वे नई पीढ़ी ठोस प्रणोदक प्रणालियों के क्षेत्र में अनुसंधान और विकास के विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार प्रकट कर सके। श्री बी भट्टाचार्य, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, एच ई एम आर एल और पेट्रोन आई डब्ल्यू ए पी एस–2015 ने एच ई एम एस आई द्वारा आयोजित किए गए तथा कार्यक्रम पर सिंहावलोकन दिया और दो दिवसीय कार्यशाला के दौरान कवर किए गए विषयों का संक्षिप्त परिचय दिया। श्री अनिल एम दातार, विशिष्ट वैज्ञानिक, महानिदेशक (आयुध और संग्राम अभियांत्रिकी), डी आर डी ओ ने कार्यशाला का उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने इंटरैक्टिव सत्र की जरूरत पर बल दिया और प्रतिनिधियों को ठोस प्रणोदक प्रणालियों के क्षेत्र में अत्याधुनिक और उन्नत प्रौद्योगिकियों के विकास के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने उच्च ऊर्जा साम्रगी की प्रगति के संदर्भ में आयुध प्रणाली के भाविष्यिक प्रचलन पर बल दिया। श्री एंड्री लिटवीनोव, उप महानिदेशक, अल्ताई, रूस, विशिष्ट अतिथि ने भी सभा को संबोधित किया और एच ई एम आर एल और एच ई एम एस आई द्वारा किए कार्यशाला के आयोजन में किए गए प्रयासों की सराहना की। उन्होंने उच्च ऊर्जा सामग्री के जीवन की सटीक भविष्यवाणी की पद्धतियों पर भी व्याख्यान दिया। अपने स्वागत भाषण में डॉ एस एन अस्थाना, उत्कृष्ट वैज्ञानिक और अध्यक्ष, आई डब्ल्यू ए पी एस–2015 ने प्रतिभागियों का स्वागत किया और तेजी से बदलती हुई एच ई एम प्रौद्योगिकी परिदृश्यों में आई डब्ल्यू ए पी एस के महत्व को बताया। इस कार्यशाला में ठोस प्रणोदक प्रणालियों के प्रख्यात शोधार्थियों के 14 आमंत्रित व्याख्यानों के पाँच तकनीकी सत्र शामिल थे।

फ्रांस, रूस, सिंगापुर और ब्रिटेन के विशेषज्ञों ने अन्वेषण पद्धतियों, उनके देशों में वर्तमान अनुसंधान, अत्याधुनिक प्रसंस्करण प्रौद्योगिकियाँ, प्रणोदक सामग्री में प्रगति, नैनो सामग्री की प्रासंगिकता, उन्नत परीक्षण प्रक्रियाएं इत्यादि पर व्याख्यान दिया। इसरो और डी आर डी ओ के शोधार्थियों नें भारत का मंगल मिशन, ठोस प्रणोदक के उन्ययन और आधुनिक निपटारे के तरीकों पर व्याख्यान दिया। विभिन्न देशों के 250 प्रतिनिधियों, डी आर डी ओ, इसरो, आयुध कारखानों, शिक्षाविदों और उद्योगविदों ने कार्यशाला में भाग लिया। दो दिवसीय कार्यशाला के दौरान हुए व्यापक विचार–विमर्श और चर्चा ने भाविष्यिक रक्षा प्रौद्योगिकियों के उच्च ऊर्जा साम्रगी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण इनपुट प्रदान किए तथा भविष्य की रक्षा प्रौद्योगिकियों के लिए उच्च ऊर्जा सामग्री के क्षेत्र में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की। इस क्षेत्र में आगे के लिए शोध और विकास पर सहयोग और दिशानिर्देश हेतु भविष्य के कार्य करने पर समूह चर्चा करने के साथ कार्यशाला का समापन हुआ। श्री पी पी सिंह, वैज्ञानिक एफ एवं संयोजक, आई डब्ल्यू ए पी एस–2015 ने धन्यवाद प्रस्ताव पेश किया।

प्रकाशन और प्रस्तुति पर कार्यशाला : वैज्ञानिक विद्वता संचार की गुणवत्ता को मजबूत करना

विज्ञान विश्वविद्यालय (यू सी एस एस), सैफाबाद, ओस्मानिया विश्वविद्यालय ने नाभिकीय औषधि तथा संबद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास), दिल्ली, और रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एम आर एल), हैदराबाद के सहयोग से 16–18 मार्च 2015 के दौरान 'प्रकाशन और प्रस्तुति पर कार्यशाला : वैज्ञानिक विद्वता संचार की गुणवत्ता को मजबूत करना' पर डी एम आर एल, हैदराबाद के तम्हांकर सभागार, में संगोष्ठी एवं प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया। प्रो डी बालसुब्रमण्यन, अनुसंधान निदेशक, एल वी प्रसाद नेत्र संस्थान (एल वी पी ई आई) एसेलुलर और आणविक जीव विज्ञान केन्द्र (सी सी एम बी) के पूर्व निदेशक ने इस कार्यक्रम का उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने वैज्ञानिक प्रकाशन और प्रस्तुतियों की गुणवत्ता पर बल दिया। डॉ अमोल ए गोखले, निदेशक, डी एम आर एल ने स्वागत संबोधन दिया। डॉ आर पी त्रिपाठी,निदेशक, इनमास और प्रो सैयद रहमान, प्राचार्य, यू सी एस एस, ओयू सम्मानीय अतिथि थे। डॉ राजीव

drdo.gov.in/drdo/pub/samachar/index.html

प्रकाशन एवं प्रस्तुति पर कार्यशाला का उद्घाटन सत्र।

विज, वैज्ञानिक एफ, कार्यशाला निदेशक ने कार्यशाला के बारे में एक संक्षिप्त विवरण दिया।

देश और विदेशों से कई प्रख्यात व्यक्तियों ने वैज्ञानिक विद्वता संचार से सम्बन्धित विषयों पर सूचनाप्रद व्याख्यान दिए। प्रोफेसर सुफाया अरुणाचलम, प्रो वानगिरि विश्व मोहन, प्रो सी के रमैय्या, डॉ अ ल मूर्ति, डॉ जी महेश, प्रो एस सुदर्शन राव, श्री चंद्रशेखर डी पी और सुश्री नितीशा बाल्य, डॉ पीटर सुबेर, श्री टेरेवोर ए गरिगौरव डावेस, सुश्री नियोमी हाऊस और श्री जेम्स एगी ने प्रतिभागियों के साथ संवाद किया। प्रतिभागियों ने विदेशी विशेषज्ञों के साथ ऑनलाइन संवाद किया। इस कार्यशाला में विद्यार्थी, शोधार्थी और वैज्ञानिकों सहित चौरानबे प्रतिभागी शामिल थे।

कार्यस्थल पर सुरक्षा जागरूकता पर पाठ्यक्रम

एकीकृत परीक्षण रेंज (आई टी आर), चांदीपुर ने 17–18 मार्च 2015 के दौरान कार्यस्थल पर सुरक्षा जागरूकता पर एक अल्पावधिक पाठ्यक्रम का आयोजन किया। 45 प्रतिभागी जिसमें तकनीकी अधिकारी, पर्यवेक्षी कर्मचारी, सुरक्षा समिति के सदस्य और सभी समूहों के सुरक्षा निरीक्षक और आई टी आर निदेशालय के लोगों ने पाठ्यक्रम में भाग लिया। अग्नि और सुरक्षा संस्थान, कटक से शिक्षकों को लिया गया। श्री एम वी के वी प्रसाद, उत्कृष्ट वैज्ञानिक, आई टी आर ने इस पाठ्यक्रम का उद्घाटन किया। श्री एम वी भास्कराचार्य, वैज्ञानिक जी, सहनिदेशक तथा डॉ बी के दास, वैज्ञानिक जी, अध्यक्ष निर्माण विभाग ने प्रतिभागियों को सम्बोधित किया। भारत के सम्मानीय प्रधानमंत्री के स्वच्छ भारत अभियान के आधार पर गृह–व्यवस्था और सुरक्षित, स्वच्छ और स्वस्थ कार्यस्थल पर बल दिया गया। अग्नि और औद्योगिक सुरक्षा पर विभिन्न वीडियो फिल्में दिखाई गई, सुरक्षा उपकरण और व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरणों को प्रदर्शन किया गया और तकनीकी सत्र को संवादात्मक बनाने के लिए एक प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया। श्री आर के बहेरा, वैज्ञानिक एफ और डॉ एस के साहू क्रमशः पाठ्यक्रम निदेशक और पाठ्यक्रम समन्वयक थे।

इंजीनियरिंग प्रक्रियाओं में गुणवत्ता सुधार पर सतत् शिक्षा पाठ्यक्रम

सूक्ष्मतरंग नलिका अनुसंधान तथा विकास केंद्र (एम टी आर डी सी), बैंगलूरू ने 25–27 फरवरी 2015 के दौरान बी ई क्यू आई परिसर, भारत इलैक्ट्रॉनिक्स, बैंगलूरू में इंजीनियरिंग प्रक्रियाओं में गुणवत्ता सुधार पर सतत् शिक्षा पाठ्यक्रम का आयोजन किया। अठारह प्रतिभागियों ने पाठ्यक्रम में भाग लिया। पाठ्यक्रम में आधारभूत गुणवत्ता, गुणवत्ता उपकरणों, आई एस ओ 9001, आई एस ओ 14001, ए एस 9100 पर जागरूकता, सी आई आई एक्जिम मॉडल, सिक्स सिग्मा और एल ई ए एन विषयों को शामिल किया गया।

तकनीकी अधिकारियों के लिए कार्यशाला

श्री आर अप्पावुराज, निदेशक, पी एक्स ई, तकनीकी अधिकारी के लिए आयोजित कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए।

प्रमाण तथा प्रायोगिकी स्थापना (पी एक्स ई), चाँदीपुर ने 09–13 मार्च 2015 के दौरान तकनीकी अधिकारियों के लिए एक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का उद्घाटन निदेशक, पी एक्स ई, श्री आर अप्पावुराज ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने कहा कि इस कार्यशाला से हिन्दी में कार्य करने में बढ़ोत्तरी होगी। बीस अधिकारियों ने कार्यशाला में भाग लिया। श्री एस के राय, हिन्दी अधिकारी और कुमारी पूजा, हिन्दी सहायक द्वारा हिन्दी में कार्य पद्धति की विस्तृत चर्चा हुई। डॉ ए के सन्निग्रही,

वैज्ञानिक एफ और अपर निदेशक ने संक्षिप्त में हिन्दी की उत्पत्ति और विकास के बारे मे बताया और हिन्दी के राजकीय भाषा के रूप में उपयोग पर जोर दिया। डॉ एन नायक, वैज्ञानिक जी और सह निदेशक ने भविष्य आयुध विकास में उन्नत परीक्षण प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल पर चर्चा की। श्री के के चंद, वैज्ञानिक ई ने राजकीय कार्य में सुरक्षा कार्यविधि के बारे में प्रतिभागियों को संक्षिप्त में बताया।

विज्ञान परिषद बैठक

अनुसंधान केंद्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद, ने आर सी आई की विज्ञान परिषद की बैठक आयोजित की। आई आई टी दिल्ली के प्रोफेसर एम जगदीश कुमार द्वारा नैनोस्केल ट्रांजिस्टर हेतु कम ऊर्जा के एकीकृत सर्किट–नए अन्वेषण और गैर–इनवेसिव तकनीक से ब्रेन स्ट्रैस मैंपिंग और इसकी संभावनाएं पर प्रोफेसर पर्वत मंडल, राष्ट्रीय मस्तिष्क अनुसंधान केन्द्र, मानेसर, गुडगाँव द्वारा आमंत्रित व्याख्यान दिए गए। राष्ट्रीय मस्तिष्क अनुसंधान केंद्र, मानेसर, गुड़गांव से प्रो पर्वत मंडल द्वारा अपनी क्षमता का आयोजन किया गया। डॉ जी सतीश रेड्डी, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, आर सी आई ने समारोह की अध्यक्षता की।

प्रशासनिक एवं वित्तीय प्रक्रिया पर सतत् शिक्षा पाठ्यक्रम

प्रमाण तथा प्रायोगिकी स्थापना (पी एक्स ई), चांदीपुर ने 16–20 मार्च के दौरान 30 प्रशासनिक सहायकों और डी आर डी ओ अधिकारियों के लिए प्रशासनिक एवं वितीय प्रक्रिया पर सतत् शिक्षा पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। श्री आर अप्पावुराज, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, पी एक्स ई ने पाठ्यक्रम का उद्घाटन किया और प्रतिभागियों को पाठ्यक्रम से प्रशासनिक और कार्यालय के कार्य संबंधी विभिन्न सरकारी नियम और अधिनियम के बारे में जानकारी से सम्पूर्ण लाभ लेने के लिए प्रेरित किया। विशेषज्ञ शिक्षकों द्वारा अवकाश, टी ए/डी ए, एल टी सी, अग्रिम और भत्ते, कल्याण सम्बन्धी, नई पेंशन प्रणाली, रिटायरमेंट लाभ इत्यादि विभिन्न नियम और अधिनियम पर विस्तृत चर्चा की गई। टीम निर्माण, सकारात्मक दृष्टिकोण, अच्छी आदतें, और धुव्रीय प्रबंधन जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर भी चर्चा की गई। डॉ ए के सन्निग्रही, वैज्ञानिक एफ, पाठ्यक्रम निदेशक थे।

लूप सिमुलेशन में हार्डवेयर पर सतत् शिक्षा पाठ्यक्रम

अनुसंधान केंद्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद ने 23–27 फरवरी 2015 के दौरान लूप सिमुलेशन में हार्डवेयर (एच आई एल एस) पर सतत् शिक्षा पाठ्यक्रम का आयोजन किया। श्री एल शोभन कुमार, वैज्ञानिक जी, पाठ्यक्रम निदेशक ने अपने उद्घाटन संबोधन में पाठ्यक्रम के उद्देश्यों पर बल दिया। डॉ जी सतीश रेड्डी, विशिष्ट वैज्ञानिक, निदेशक, आर सी आई ने पाठ्यक्रम का उद्घाटन किया। आपने एच आई एल एस और वास्तविक सिमुलेशन गुणों को कवर करने वाली

पी एक्स ई में प्रशासनिक एवं वित्तीय प्रक्रिया पर आयोजित सतत् शिक्षा पाठ्यक्रम में प्रतिभागियों के साथ श्री आर अप्पावुराज, निदेशक (दांये से तीसरे बैठे हुए)।

drdo.gov.in/drdo/pub/samachar/index.html

पाठ्यक्रम प्रतिभागियों के साथ डॉ जी सतीश रेड्डी, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, आर सी आई, हैदराबाद (प्रथम पंक्ति में बांये से चतुर्थ)।

प्रणाली डिजाइन की आवश्यकता के महत्व पर बल डाला। विभिन्न डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं और अन्य संगठनों से 34 से अधिक प्रतिभागियों ने पाठ्यक्रम में भाग लिया। इस पाठ्यक्रम के दौरान महत्वपूर्ण विषयों में प्रक्षेपास्त्र एयरोडाईनेमिक्स का परिचय, नेविगेशन, नियंत्रण और मार्गदर्शन, आर एफ और आई आई आर सिकर्स मॉड़लिंग और एच आई एल एस, मोंटी कार्लो सिमुलेशन, मॉडल आधारित डिजाइन पद्धति, 6–डीओएफ मॉडलिंग, एच आई एल एस में भविष्यिक प्रचलन शामिल थे। श्री समीर बी पटेल, वैज्ञानिक ई, पाठ्यक्रम समन्वयक थे।

हिन्दी कार्यशाला

अनुसंधान केंद्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद ने 18 मार्च 2015 को वर्ष 2014–15 की चौथी हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया। श्री के रामा शर्मा, वैज्ञानिक जी, डी ओ एम एस, उपाध्यक्ष, ओ एल आई सी, आर सी आई ने इस कार्यशाला का उद्घाटन किया। श्री एन वेंकेटेश, वैज्ञानिक एफ, सदस्य सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने हिन्दी विभाग की विभिन्न गतिविधियों पर प्रकाश डाला। श्री काजिम अहमद, वरिष्ठ हिन्दी सहायक, आर सी आई ने राजभाषा नियमों और कार्यान्वन तथा हिन्दी व्याकरण पर व्याख्यान दिया। लगभग 20 प्रतिभागियों ने कार्यशाला में भाग लिया।

राष्ट्र निर्माण एवं रक्षा अनुसंधान पर संगोष्ठी

वैज्ञानिक विश्लेषण समूह (एस ए जी), दिल्ली ने 25–26 मार्च 2015 के दौरान मेटकॉफ हाऊस

श्री आर बी सिंह, अध्यक्ष, सेपटेम, संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए।

संगोष्ठी स्मारिका के विमोचन का दृश्य।

परिसर स्थित डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं के साथ मिलकर राष्ट्र निर्माण एवं रक्षा अनुसंधान विषय पर दो दिवसीय संयुक्त राजभाषा हिन्दी संगोष्ठी का आयोजन किया। श्री आर बी सिंह, अध्यक्ष, सेपटेम, उद्घाटन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। इस कार्यक्रम की श्री हरिबाबू श्रीवास्तव, निदेशक, लेजर विज्ञान एव प्रौद्योगिकी केन्द्र (लेसटेक) और श्री सुधीर गुप्ता, निदेशक सेपटेम और श्री एस बी तनेजा, निदेशक, ईसा और डॉ एम आर भूटियानी, निदेशक, रक्षा भू–भाग अनुसंधान प्रयोगशाला ने शोभा बढाई। श्रीमती अनु खोसला, वैज्ञानिक जी, एस ए जी ने विशिष्ट अतिथियों का

स्वागत किया और सभा को संगोष्ठी के उद्देश्यों से अवगत कराया। संगोष्ठी ने हिन्दी के माध्यम से तकनीकी लेखन को प्रोत्साहन करने का और वैज्ञानिक समुदाय द्वारा हिन्दी में अनुसंधान आलेखों के लिए एक मंच प्रदान किया।

श्री आर बी सिंह ने संगोष्ठी समारिका का विमोचन किया और अपने संबोधन में उन्होंने सभासदों को हिन्दी में अधिकाधिक वैज्ञानिक और तकनीकी अनुसंधान आलेख लिखने के लिए प्रेरित किया। कार्यशाला के दौरान राष्ट्र निर्माण और रक्षा अनुसंधान से जुडे महत्वपूर्ण मुद्दों पर 30 अनुसंधान आलेख प्रस्तुत किए गए। श्रीमती प्रतिभा यादव, वैज्ञानिक जी और उपाध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वन समिति ने धन्यवाद प्रस्ताव पेश किया।

अनुसंधान परिषद की बैठक

अनुसंधान परिषद की बैठक के दौरान श्री अश्वघोष गंजू, निदेशक, सासे एवं डॉ पी एस गोयल, पूर्व सचिव, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय।

पुनर्गठित सासे अनुसंधान परिषद की पहली बैठक 23 मार्च 2015 को डॉ पी एस के गोयल, पूर्व सचिव, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (एम ओ ई एस) की अध्यक्षता में हुई। प्रोफेसर एम जी के मेनन, डी आर डी ओ चेयर; श्री नरेश कुमार, वैज्ञानिक जी, आर एण्ड डी (इंजीनियर्स), पुणे; डॉ अमोद कुमार, वैज्ञानिक एफ, महानिदेशक कार्यालय (ए सी ई), पुणे; और मेजर विक्रम सिंह, सैन्य संचालन, नई दिल्ली विशेषज्ञों के रूप में बैठक में मौजूद थे। श्री अश्वघोष गंजू, निदेशक, सासे ने सदस्यों का स्वागत किया और सासे की वर्तमान अनुसंधान गतिविधियों और भविष्य के कार्यक्रम पर संक्षिप्त प्रस्तुति दी।

इसके बाद विभिन्न विभागों से सम्बन्धित वैज्ञानिकों ने प्रस्तुति दी। अपने उद्घाटन भाषण में डॉ गोयल केन्द्रीय वैज्ञानिक उपकरण संगठन, चंडीगढ़, नेशनल रिमोट सेंसिंग केन्द्र, हैदराबाद, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय और उष्णकटिबंध मौसम विज्ञान का भारतीय संस्थान, पुणे, के वैज्ञानिकों को अनुसंधान परिषद में शामिल किए जाने की जरूरत पर बल दिया क्योंकि सासे जिन क्षेत्रों में कार्यरत हैं वो बहुत विशेषज्ञीय एवं बहु–अनुशासनात्मक हैं। परिषद ने देश और सेना की आवश्यकतानुसार अनुसंधान और विकास कार्यक्रम को तैयार करने का सुझाव दिया। परिषद ने निम्नलिखित विषयों–हिमस्खलन पूर्वानुमान, हिमस्खलन की आशंका वाले क्षेत्रों में प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण, जमीन पैनिट्रेटिंग रडार अध्ययन, डॉपलर मौसम रडार, हिमस्खलन नियंत्रण संरचनाओं, बर्फ कटाई, हिमस्खलन खतरे के नक्शे, वेब आधारित सायरोस्फीयर पोर्टल, बर्फ से सम्बन्धित उपकरणों की कैलिब्रेशन और सायरोस्फीयर सिमुलेशन प्रयोगशाला की स्थापना पर विचार–विमर्श किया। परिषद की राय थी कि सासे को अपनी भूमिका पूरे हिमालय क्षेत्र में बढ़ानी चाहिए जिससे आम जनता के लिए हिमस्खलन पूर्वानुमान में सेवा प्रदान की जा सके।

असंवेदनशील शस्त्र परीक्षण कार्य–प्रणाली और प्रोटोकाल्स

देश में पहली बार चरम प्राक्षेपिकी अनुसंधान प्रयोगशाला (टी बी आर एल), चंडीगढ़ द्वारा 16–20 फ़रवरी 2015 के दौरान असंवेदनशील शस्त्र (आई एम) अनुपालन पर एक सी ई पी पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य उन नीतियों के स्थापत्य और आवश्यकता पर मार्गदर्शन प्रदान करना था जिसकी अंतर्राष्ट्रीय ट्रेसीबिल्टी (खोज की क्षमता) है। इस क्षेत्र में विशेषज्ञों द्वारा 38 प्रतिभागियों को पंद्रह व्याख्यान दिए गए।

एयरोस्पेस इंस्ट्रूमेंटेशन में नवीनतम प्रचलनों पर सतत् शिक्षा पाठ्यक्रम

अनुसंधान केंद्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद, उड़ान इंस्ट्रूमेंटेशन निदेशालय ने 02–06 मार्च 2015 के दौरान एयरोस्पेस इंस्ट्रूमेंटेशन में नवीनतम प्रचलनों पर सतत् शिक्षा पाठ्यक्रम का आयोजन किया। विभिन्न डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं जैसे ए एस एल, डी आर डी एल, सी वी आर डी ई, कैब्स, ए

drdo.gov.in/drdo/pub/samachar/index.html

डी ए, आई टी आर, पी एक्स ई, अनुराग, जी ए ई टी ई सी, तथा आर सी आई के 23 प्रतिभागियों नें पाठ्यक्रम में भाग लिया। डॉ जी सतीश रेड्डी, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक ने पाठ्यक्रम का उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने प्रक्षेपास्त्र और हवाई अनुप्रयोगों में उडान इन्स्ट्रूमेंटेशन के महत्व पर बल दिया और आशा की कि यह पाठ्यक्रम सभी प्रतिभागियों को एयरोस्पेस इन्सट्रूमेंटेंशन में नवीनतम प्रचलनों के बारे में जानकारी देगा। डॉ एस बी गाडगिल, उत्कृष्ट वैज्ञानिक और सह निदेशक, आर सी आई ने अपने समापन भाषण में अभिव्यक्त किया कि सभी प्रतिभागियों ने इस पाठ्यक्रम से लाभ उठाया होगा।

हिन्दी कार्यशाला

रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एम आर एल) में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन दिनांक 26 फरवरी 2015 को टी आई सी सेमिनार हॉल में

मंचासीन, हिन्दी प्राध्यापक श्री राम सिंह शेखावत, राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सचिव एवं संयोजक श्री जे एस यादव, सार्वजनिक इंटरफेस समिति के अध्यक्ष डॉ मनोज कुमार जैन एवं अन्य सदस्य (बांये से)।

किया गया। कार्यशाला में शिक्षक के रूप में केंद्रीय शिक्षण योजना में कार्यरत हिन्दी प्राध्यापक श्री राम सिंह शेखावत को आमंत्रित किया गया। उन्होंने हिन्दी टंकण में यूनीकोड के प्रयोग पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। कार्यशाला में प्रशासनिक सहायकों तथा भंडार सहायकों को प्रशिक्षण प्रदान कराया गया। कार्यशाला में लगभग 20 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्राध्यापक शेखावत जी ने बड़े ही सरल माध्यम से प्रतिभागियों को यूनीकोड से परिचित कराया एवं उसके महत्व पर प्रकाश डालते हुए सभी प्रतिभागियों को उनके निजी कंप्यूटरों में उसे स्थापित करने की विधि भी बताई। सभी प्रतिभागियों ने हिन्दी में टंकण करने का अभ्यास किया। राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सचिव एवं संयोजक, श्री जे एस यादव ने कार्यशाला के महत्व एवं हिन्दी प्राध्यापक श्री राम सिंह शेखावत का परिचय देते हुए, कार्यशाला का शुभारंभ किया। साथ ही उन्होने प्रतिभागियों को हिन्दी में काम करने हेतु प्रेरित भी किया। सार्वजनिक इंटरफेस समिति के अध्यक्ष, डॉ मनोज कुमार जैन, वैज्ञानिक एफ भी इस कार्यशाला में मौजूद थे। कार्यशाला के समापन सत्र में प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किये गये।

हिंदी हमारी राजभाषा है और भारतीय होने के नाते राजभाषा हिंदी में अपना कार्य करना हमारा नैतिक दायित्व है। इसी कड़ी को आगे बढाते हुए तथा राजभाषा हिंदी के संवैधानिक प्रावधानों को ध्यान में रखते हुए प्रयोगशाला में दिनांक 30 मार्च 2015 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में प्रयोगशाला के 15 प्रशासनीक अधिकारियों, लेखा अधिकारियों तथा भंडार अधिकारियों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया। कार्यशाला में प्रशिक्षक के रूप में श्रीमती बेला, हिंदी प्राध्यापक, हिंदी शिक्षण योजना को आमंत्रित किया गया जिन्होंने राजभाषा नीति एवं अधिनियम विषय पर अपना महत्वपूर्ण व्याख्यान दिया। कार्यशाला के शुरूआत में राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सचिव एवं संयोजक श्री जे एस यादव ने राजभाषा हिंदी की सरलता एवं सुगमता को बताते हुए प्रतिभागियों को इसमें कार्य करने हेतु प्रेरित किया। कार्यशाला के अंत में प्रतिभागियों को प्रमाण–पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सचिव एवं संयोजक श्री जे एस यादव एवं हिन्दी प्राध्यापक श्रीमति बेला कार्यशाला में उपस्थित अन्य सदस्यों के साथ।

डी आर डी ओ द्वारा सामाजिक योगदान

रक्षा प्रयोगशाला (डी एल), जोधपुर

रक्षा प्रयोगशाला (डी एल), जोधपुर द्वारा 26 फरवरी 2015 को जिला आयुर्वेदिक विभाग के सहयोग से स्वाइन फ्लू की रोकथाम एवं जानकारी के लिए एक चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। डॉ एस आर वढ़ेरा, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, रक्षा प्रयोगशाला (डी एल), जोधपुर ने इस शिविर का उद्घाटन किया। स्वाइन फ्लू की रोकथाम के लिए डी एल के लगभग 1100 कर्मियों को आयुर्वेदिक औषधियां प्रदान की गई।

स्वाइन फ्लू की रोकथाम के लिए डी एल, जे में आयोजित चिकित्सा शिविर में आयुर्वेदिक औषधियों का वितरण किया जा रहा है।

डॉ इन्दीवर भारद्वाज, जिला आयुर्वेद अधिकारी एवं उनकी टीम के सदस्यों ने स्वाइन फ्लू की रोकथाम एवं जानकारी के लिए सभी सदस्यों को महत्वपूर्ण सूचना तथा परामर्श दिया।

डॉ अन्तर्यामी सिंह, ओ आई सी एम आई एवं उनकी टीम तथा डी एल की निर्माण समिति तथा आयुर्वेदिक विभाग के सदस्यों द्वारा किए गए प्रयासों के कारण शिविर का आयोजन बहुत ही सफल रहा।

रक्षा अनुसंधान प्रयोगशाला (डी आर एल), तेजपुर

अपने सामाजिक दायित्वों को पूरा करने की दिशा में रक्षा अनुसंधान प्रयोगशाला (डी आर एल), तेजपुर ने हिंसा से प्रभावित 500 परिवारों को अपने द्वारा विकसित डिफेंडर नेट नामक लोंग–लास्टिंग इनसैक्टिसिडल नेट का वितरण किया। ये परिवार सोनितपुर जिला, असम उप–प्रभाग के बिस्वनाथ चराली के अंतर्गत फुलबारी गांव के शरणार्थी शिविर में रह रहे हैं। श्री आर एम सिंह, पुलिस अपर महानिदेशक तथा पुलिस अधीक्षक, बिस्बनाथ चराली ने 04 फरवरी 2015 को इनका वितरण किया। यह नेट 20 बार धोने के बाद भी प्रभावी है।

श्री आर एम सिंह, पुलिस अपर महानिदेशक, हिंसा से प्रभावित व्यक्ति को डिफेंडर नेट प्रदान करते हुए।

drdo.gov.in/drdo/pub/samachar/index.html

साईकिल रैली का आयोजन

डॉ पी शिवकुमार, निदेशक, सी वी आर डी ई, साइकिल रैली का उद्घाटन करते हुए।

संग्राम वाहन अनुसंधान तथा विकास स्थापना (सी वी आर डी ई), चेन्नई के ऐडवेन्चर क्लब ने डी आर डी ओ द्वारा रक्षा बलों के लिए विकसित किए गए उत्पाादों के संबंध में जागरूकता उत्पन्न करने तथा आम जनता को सकरार द्वारा चलाए गए स्वच्छ भारत अभियान के बारे में जानकारी प्रदान करने तथा साथ ही डी आर डी ओ में उपलब्ध अनुसंधान एवं रोजगार अवसरों के बारे में छात्रों को जागरूक बनाने के उद्देश्य से मार्ग में पड़ने वाले विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं का दौरा करने के लिए 09–13 फरवरी, 2015 के दौरान मेलमासवतुर एजुकेशनल ट्रस्ट (अवदी से 100 किमी दूर) तक एक साइकिल रैली आयोजित की।

संग्राम वाहन अनुसंधान तथा विकास स्थापना (सी वी आर डी ई) के निदेशक, डॉ पी शिवकुमार, उत्कृष्ट वैज्ञानिक ने झंडा दिखाकर इस रैली को रवाना किया। इस रैली में नौसेना भौतिक तथा समुद्र विज्ञान प्रयोगशाला (एन पी ओ एल), कोच्चि; उन्नत प्रणाली प्रयोगशाला (ए एस एल) तथा रक्षा अनुसंधान तथा विकास प्रयोगशाला (डी आर डी एल), हैदराबाद; वाहन अनुसंधान तथा विकास स्थापना (वी आर डी ई), अहमदाबाद; इलैक्ट्रोनिक्स तथा रडार विकास स्थापना (एल आर डी ई), बेंगलूरू; तथा संग्राम वाहन अनुसंधान तथा विकास स्थापना (सी वी आर डी ई) से लगभग 45 प्रतिभागियों ने भाग लिया। रैली में शामिल लोगों ने मेलामारूवतुर के मार्ग में बी एस अबदुर्रहमान विश्वविद्यालय, वांदालुर; सेंट जोसफ स्कूल, चेन्गलपेट, आदि पराशक्ति इंजीनियरिंग कॉलेज तथा आदि पराशक्ति पॉलिटेक्निक कॉलेज का दौरा किया। टीम ने वीडियो प्रस्तुती के माध्यम से डी आर डी ओ द्वारा विकसित किए गए उत्पादों के संबंध में विस्तृत प्रस्तुतीकरण दिया। पोस्टर प्रस्तुतिकरण के साथ ही अर्जुन एम बी टी, कारियर कमान पोस्ट ट्रैक (सी सी पी टी) वाहन तथा हलके युद्धक वायुयान (एल सी ए) के मॉडलों का भी प्रदर्शन किया गया।

लौटते हुए रैली टीम ने तिरूकझुकुंदरम स्थित ए एस ए ए न मेमोरियल कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी तथा तिरुवल्लुर स्थित प्रत्युश कॉलेज का दौरा किया। इस दौरान बड़ी संख्या में छात्रों ने डी आर डी ओ के उत्पादों के प्रदर्शन तथा प्रस्तुतिकरण को देखा। टीम ने साइकिल रैली के संपूर्ण मार्ग में यात्रा के दौरान आम जनता को स्वच्छ भारत अभियान के लाभों के बारे में विस्तार से बताया।

भारतीय विज्ञान सम्मेलन तथा एस आई ए टी प्रदर्शनी-2015 में प्रतिभागिता

वाहन अनुसंधान तथा विकास स्थापना (वी आर डी ई), अहमदनगर ने विज्ञान भारती (विभा) द्वारा गोवा विश्वविद्यालय पणजी तथा गोवा सरकार के सहयोग से 5–8 फरवरी 2015 के दौरान आयोजित चौथे भारतीय विज्ञान सम्मेलन तथा प्रदर्शनी में भाग लिया। माननीय रक्षा मंत्री श्री मनोहर पर्रिकर ने इस सम्मेलन का उद्घाटन किया। इस प्रदर्शनी में वी आर डी ई ने रासायनिक, जैविक, रेडियोधर्मी कणों के विकिरण तथा नाभिकीय (सी बी आर एन) आपदा की स्थिति में प्रयोग में लाए जाने वाले लघु मानवरहित भू यान (यू जी वी), बख्तर बंद जलस्थली डोजर (ए ए डी) के मानक मॉडल का प्रदर्शन किया एवं नेशनल सेंटर फॉर ऑटोमोटिव टेस्टिंग (एन सी ए टी) सहित वी आर डी ई के उत्पादों एवं क्रियाकलापों के बारे में जानकारी उपलब्ध कराई। गोवा के छात्रों ने वी आर डी ई के उत्पादों एवं अवसंरचना में गहरी रूचि प्रदर्शित की।

पाठकों की राय

(आपकी राय हमारे लिए महत्त्वपूर्ण है, इससे हमें इस मासिक पत्रिका में परिवर्धन करने तथा संगठन को बेहतर रूप में अपनी सेवा उपलब्ध कराने का अवसर प्राप्त होगा)

1. स्थापना का नाम : .....

2. आप डी आर डी ओ के क्रियाकलापों को उपयुक्त रूप में प्रस्तुत करने के एक माध्यम के रूप में डी आर डी ओ समाचार को निम्नलिखित किस श्रेणी में रखेंगे?

उत्कृष्ट ☐ अत्युत्तम ☐ उत्तम ☐ ठीक–ठाक ☐ संतोषजनक ☐

3. आप डी आर डी ओ समाचार में प्रस्तुत की गई तकनीकी सामग्री को निम्नलिखित किस श्रेणी में रखेंगे?

उत्कृष्ट ☐ अत्युत्तम ☐ उत्तम ☐ ठीक–ठाक ☐ संतोषजनक ☐

4. आप डी आर डी ओ समाचार में दिए गए चित्रों की गुणवत्ता को किस श्रेणी में रखेंगे?

उत्कृष्ट ☐ अत्युत्तम ☐ उत्तम ☐ ठीक–ठाक ☐ संतोषजनक ☐

5. आपकी राय में डी आर डी ओ समाचार में आदर्श रूप में कितने पृष्ठ होने चाहिए?

8 पृष्ठ ☐ 12 पृष्ठ ☐ 16 पृष्ठ ☐ 20 पृष्ठ ☐

6. आप डी आर डी ओ समाचार को निम्नलिखित किस प्रारूप में पसंद करेंगे?

मुद्रित ☐ ई–प्रकाशन ☐ वीडियो पत्रिका ☐

7. आपको डी आर डी ओ समाचार कब प्राप्त होता है?

प्रकाशन के पूर्ववर्ती महीने में ☐ प्रकाशन वाले महीने में ☐ प्रकाशन के अगले महीने में ☐

8. डी आर डी ओ समाचार की तकनीकी सामग्री में आगे और सुधार लाने के लिए सुझाव, यदि हों?

.....

हस्ताक्षर :

नाम :.....

पता : .....

कृपया अपने सुझाव निम्नलिखित पते पर भेजें :

संपादक, डी आर डी ओ समाचार, डेसीडॉक, डी आर डी ओ, मेटकॉफ हाउस, दिल्ली–110054

director@desidoc.drdo.in

drdo.gov.in/drdo/pub/samachar/index.html

डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं में पधारे अतिथिगण

आयुध अनुसंधान तथा विकास स्थापना (ए आर डी ई), पुणे

श्री एस वी गाडे परियोजना निदेशक, ए टी ए जी एस महानिदेशक, तोपखाना को ए टी ए जी एस की जानकारी देते हुए।

13 फरवरी 2015 : लेफ्टिनेंट जनरल पी आर शंकर, विशिष्ट सेवा मेडल, महानिदेशक, तोपखाना, ब्रिगेडियर संजीव ग्रोवर, उपमहानिदेशक, तोपखाना (प्रचालन)। आपको उन्नत टोव्ड तोपखाना बंदूक प्रणाली एवं पिनाका मार्क–II के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी गई।

गैस टरबाइन अनुसंधान स्थापना (जी टी आर ई), बैंगलूरू

श्री जी मोहन कुमार, रक्षा उत्पादन (दांये से तीसरे) इंजन उपकरणों में अपनी रूचि दिखाते हुए।

05 मार्च 2015 : श्री जी मोहन कुमार, भारतीय प्रशासनिक सेवा, सचिव, रक्षा उत्पादन, डॉ सी पी नारायणन, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, जी टी आर ई ने इंजन विकास कार्यक्रम अद्यतन की उपलब्धियों के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी। इस अवसर पर कावेर एवं मानिक इंजन का प्रदर्शन भी किया गया।

उच्च उर्जा प्रणाली एवं विज्ञान केन्द्र (चेस), हैदराबाद

डॉ वी जी शेखरन, विशिष्ट वैज्ञानिक, महानिदेशक, एम एस एस, डी आर डी ओ (दांये) चेस गतिविधियों में अपनी रूचि दिखाते हुए।

21 मार्च 2015 : डॉ वी जी शेखरन, विशिष्ट वैज्ञानिक, महानिदेशक, एम एस एस, डी आर डी ओ, श्री सुरंजन पाल, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, चेस ने आपको तकनीकी उपलब्धियों, ढांचागत सुविधाओं तथा निर्माण संबंधी गतिविधियों की जानकारी दी। आपके समक्ष प्रयोगशाला आधारित बीम डायरेक्टिंग ऑप्टिकल चैनल अगेंस्ट ए रोटेटिंग टार्गेट वाले 1 किलोवाट के ब्रास बोर्ड मॉड्यूल का प्रदर्शन भी किया गया।

नौसेना भौतिक तथा समुद्रविज्ञान प्रयोगशाला (एन पी ओ एल), कोच्चि

कोमोडोर पुनीत चड्ढा, पी डी एस आर आई एच क्यू, रक्षा मंत्रालय(बांये से दूसरे) को एन पी ओ एल की परियोजना गतिविधियों के बारे में बताया जा रहा है।

10 मार्च 2015 : कोमोडोर पुनीत चड्ढा, पी डी एस आर आई एच क्यू, रक्षा मंत्रालय (एन)।

ISSN 0971-4405

अनुसंधान केंद्र इमारत (आर सी आई), रक्षा प्रयोगशाला (डी एल), जोधपुर हैदराबाद

श्रीमती वंदना श्रीवास्तव, एफ ए (डी एस) को आर सी आई की गतिविधियों के बारे में बताया जा रहा है।

09 अप्रैल 2015 : श्रीमती वंदना श्रीवास्तव, एफ ए (डी एस)।

लेफ्टिनेंट जनरल अनूप मल्होत्रा (दांये) तथा कॉरपोरेट रिव्यू कमेटी के अन्य सदस्यों को रक्षा प्रयोगशाला की गतिविधियों के बारे में बताया जा रहा है।

03 मार्च 2015 : कॉरपोरेट रिव्यू कमेटी के सदस्य लेफ्टिनेंट जनरल अनूप मल्होत्रा, मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (आर एवं एम); श्रीमती नबनीता आर कृष्णन, निदेशक, परियोजना तथा समन्वय निदेशालय; डॉ ए के सिंह, निदेशक, कार्मिक निदेशालय; सामग्री प्रबंधन निदेशालय, मानव संसाधन विकास निदेशालय, के सदस्य।

प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं पर विशेषांक

डी आर डी ओ समाचार के माध्यम से जनमानस/सरकारी संस्थानों/वैज्ञानिक संस्थानों/विभिन्न विश्वविद्यालयों को डी आर डी ओ के विषय में अधिक जागरूक करने के संबंध में डी आर डी ओ की सभी प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं पर विशेषांक प्रकाशित करने का प्रस्ताव है। इससे डी आर डी ओ की प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं के बारे में अधिक एवं सही सूचना का प्रसार होगा, जिससे डी आर डी ओ की प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं में हो रहे विभिन्न रक्षा एवं जनोपयोगी अनुसंधानों के विषय में सही परिप्रेक्ष्य में जानकारी उपलब्ध करायी जा सकेगी। इस कड़ी में आयुध अनुसंधान तथा विकास स्थापना (ए आर डी ई), पुणे ; रक्षा प्रयोगशाला (डी एल), जोधपुर ; रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केंद्र (डेसीडॉक), दिल्ली ; तथा वाहन अनुसंधान तथा विकास स्थापना (वी आर डी ई), अहमदनगर पर विशेषांक प्रकाशित किये जा चुके हैं।

कृपया विशेषांक हेतु अपनी प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं के विभिन्न गतिविधियों से संबंधित उत्तम चित्र तथा सामग्री यथाशीघ्र भेजें। इसे हम आगामी अंकों में प्रकाशित करने का भरसक प्रयास करेंगे।

drdo.gov.in/drdo/pub/samachar/index.html

मुख्य सम्पादक: गोपाल भूषण
सह मुख्य सम्पादक: सुमति शर्मा
सम्पादक: फूलदीप कुमार
सहायक सम्पादक: अनिल कुमार शर्मा, अशोक कुमार
सम्पादकीय सहायक: दिनेश कुमार, संजय कटारे
मुद्रण: एस के गुप्ता, हंस कुमार
विपणन: आर पी सिंह

श्री गोपाल भूषण, निदेशक, डेसीडॉक द्वारा डी आर डी ओ की ओर से मुद्रित एवं प्रकाशित
प्रकाशक : डेसीडॉक, मेटकॉफ हाउस, दिल्ली-110054 ; दूरभाष : 011-23812252 ; फैक्स : 011-23813465 ; ई-मेल : director@desidoc.drdo.in